प्रीत का दरपन उलझ पड़ा है फर्ज़ के पत्थर से इस बार
तू ही बता महबूब मेरे अब कैसे प्रीत करे सिंगार

ज़ख़्मों  के जंगल में खो गये ख़ुशियों के तूफ़ान
मुझे कहते हैं सब नादान

इश्क ख़ुदा है, प्रेम है ईश्वर, कहते  हैं  दुनिया वाले
नफ़रत क्यों, रुसवाई क्यों, क्यों मेरे नसीब में हैं नाले
क्यों है गुरेज़ाँ कोई बताये उल्फ़त से इन्सान
मुझे कहते हैं सब नादान

हो गये सावन गीत मेरे ज़ख़्मी घायल अरमान
मुझे कहते हैं सब नादान



# शोहरत की धूप

ग़ज़ल  संग्रह

**रमेश  'कँवल'**

# शोहरत की धूप

**(संगिनी मंजू के लिए)**

गुलों की ताज़गी हूँ,
मैं शबनम की नमी हूँ।

हया सिंगार मेरा,
कली की सादगी हूँ।

दिसंबर का हूँ सूरज,
मई की चांदनी हूँ।

निहारो रात-दिन तुम,
मैं इक सूरत भली हूँ।

मैं मस्ती की नदी हूँ,
शरीके-ज़िंदगी हूँ।

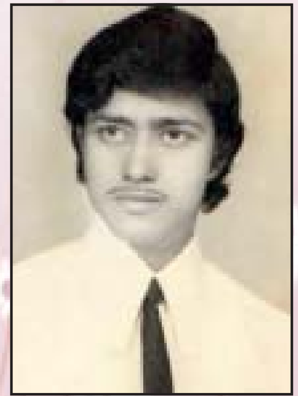

**1972 में प्रथम प्रकाशित ग़ज़ल का शायर**

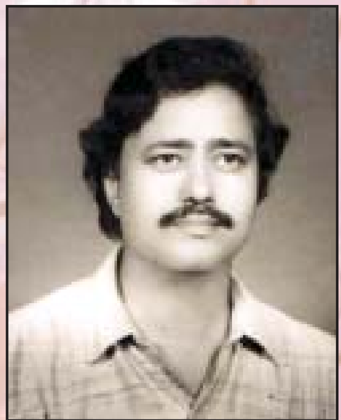

**1997 में प्रथम प्रकाशित पुस्तक 'लम्स का सूरज' (उर्दू) और 'सावन का कँवल' (हिन्दी) का शायर**



# अनुक्रम


1. फ़नो-फ़िक्र की पाकीज़गी का शायर: रमेश कँवल-**अनवारे इस्लाम** 11
2. रूमानियत की ख़ुशबू से लबरेज़ है शोहरत की धूप- **विजेन्द्र शर्मा** 16
3. शोहरत की धूप में मसरूफ़ियत का सफ़र- **रमेश कँवल** 20
4. जुनू हूँ, आशिक़ी हूँ 25
5. मुस्कराऊँगा, गुनगुनाऊँगा 27
6. ख़ूबसूरत लगा चाँद कल 28
7. तू उधर था, इधर हो गया 29
8. इक नशा सा ज़हन पर छाने लगा 30
9. फूल को ख़ुशबू, सितारों को गगन हासिल हो 31
10. रहबरे-क़ौम, रहनुमा तुम हो 32
11. नाम हूँ मैं, मेरा पता तुम हो 33
12. तुमसे मैं, मुझसे आशना तुम हो 34
13. आईये मेहरबाँ और पास आईये 35
14. जो अब तक न पाया वो सब चाहिए 36
15. ज़ख़्म पर ज़ख़्म खाता रहा हूँ 37
16. मुस्कुराने में वक़्त लगता है 38
17. मिलने में तो बहुत मज़ा है, 39
18. दिन को दिन लिखना रात मत लिखना 40
19. ज़िंदगी नाहक उदासी भर नहीं 41
20. अपनी ख़ुशियाँ सभी निसार करूँ 43

21. उलझनों के गाँव में दुश्वारियों का हल भी है 44
22. ज़िंदगी इन दिनों उदास कहाँ 45
23. ज़ख़्म पर ज़ख़्म वह नया देगा 46
24. बल खाती मछलियाँ हैं, सफ़र चाँदनी का है 48
25. क़ुरबत की तल्ख़ियों से पिघलने लगी है शाम 49
26. गुज़रे मौसम का पता सुर्ख़ लबों पर रखना 50
27. लम्स की आँधियों से जो डर जायेंगे 52
28. आस्थाओं का मुसाफ़िर खो गया, 53
29. जल गये याद के बामो-दर धूप में, 54
30. इक हवेली में बेचैन थे बामो-दर 55
31. रंजिशे उभरीं, तअल्लुक़ के सभी दरपन चनक कर रह गये 57
32. शाम हुई क़िश्तों में बिखरते सूरज का मंज़र उभरा 58
33. आओ तुम आकर बसा दो मेरे ख़्वाबों के खंडर 59
34. नुक़ई उजाले पर सुरमई अँधेरा है 60
35. बिखरी हुई हयात से सिमटे लिबास थे 61
36. अगरचे मुझको समर्पित किसी का यौवन था 62
37. ऐ यार मेरे हिज्र के जंगल को जला दे 63
38. जुनूँ की वादियों से दिल को लौटाना भी मुश्किल है 64
39. जोबन के दरीचों पे कोई पर्दा नहीं था 65
40. जब समुन्दर में सूरज कहीं सो गया 66
41. लिबासे-ज़िंदादिली तार तार था कितना 67
42. सुनहरी यादों के जंगल में खो गई होगी 68
43. किसी की आँखों में बेहद हसीन मंज़र था 69
44. हरी पत्तियों पर फिसलती रही 70
45. आस्माँ से छिन गया जब चाँद तारों का लिबास 71
46. मुक़द्दर का सूरज घटाओं में था 72
47. वह जो लगता था पयम्बर इक दिन 73
48. जब से वह हो गई इक छैल-छबीले से अलग 74
49. मये-गुलरंग का क़ुसूर नहीं 75
50. मेरी सदाओं का सूरज बुझा बुझा सा था 76
51. ना-कर्दा गुनाहों की सज़ा काट रहे हैं 77
52. काविशों का क़ाफ़िला उनकी नवाज़िश पर रुका 78
53. रोज़ डूबे हुये सूरज को उगा देती है 79
54. सहमी सहमी हुई तस्वीर लिये बैठे हैं 80
55. तुझे मैं ख़्वाबों का अलबम दिखा नहीं पाया 82
56. तन की ख़्वाहिश मन की लगन को सू-ए-हवस ले जायेगी 83
57. है बात जब कि जलती फ़ज़ा में कोई चले 84
58. मुश्किलों की आँच में तपकर पयम्बर बन गये 85
59. उभरेगा कभी जो है अभी डूबता चेहरा 86
60. टूटे हुये तारे का मुक़द्दर हूँ सद अफ़सोस 87
61. पत्थरों को आईना दिखला रहा है कोई शख़्स 88
62. जब भी मैं उससे मिलने की लेकर दुआ गया 89


शोहरत की धूप

| | | |
|---|---|---|
| 63. | जामो-सुबू यूँ ही नहीं ठुकराये हुये हैं | 90 |
| 64. | पहुँच इक मुश्ते-ख़ाकी की सितारों के जहाँ तक है | 92 |
| 65. | काबे से निकल के भी हैं इक काबे के अंदर | 93 |
| 66. | जब भी मिलता है कोई शख़्स अकेला मुझको | 94 |
| 67. | जब ज़ुल्फ़ तेरी मुझ पे बिखरती नज़र आये | 95 |
| 68. | ग़म तेरा मुझे अपनों का अहसास दिलाये | 96 |
| 69. | हर आदमी दुख दर्द में ग़लताँ नज़र आया | 97 |
| 70. | मैं शहर में पत्थर के हूँ इक पैकरे-जज़्बात | 98 |
| 71. | पैरों में मेरे फ़र्ज़ की ज़ंजीर पड़ी है | 99 |
| 72. | ख़्वाबों के दरीचों से न अब रूप दिखाओ | 100 |
| 73. | वो रुख़े-शादाब है और कुछ नहीं | 102 |
| 74. | आज भी मेरा दामन ख़ाली, आज भी दिल वीरान | 104 |
| 75. | सर्द है रात, सुलगती हुई तन्हाई है | 105 |
| 76. | जुर्म है इश्क़ तो हाँ इसका ख़तावार हूँ मैं | 107 |
| 77. | झूमती हर सुबह की ख़ूँ में नहाई शाम है | 109 |
| 78. | हर दम दिल के आँगन में ली ग़म ने ही अँगड़ाई | 110 |
| 79. | गर तेरी बंदगी नहीं होती | 111 |
| 80. | तुम ही कहो बढ़ जाती है क्यों बरसातों में दिल की जलन | 112 |
| 81. | उमीदों की बस्ती सजी, तुम न आये | 113 |
| 82. | दिल की दुनिया हो गई ज़ेरो-ज़बर | 114 |
| 83. | बाँहो में समुन्दर के दरिया का सिमट जाना | 116 |
| 84. | सामने तुम हो, सामने हम हैं, बीच में शीशे की दीवार | 117 |
| 85. | क्या कशिश थी तेरे बहाने में | 118 |
| 86. | हुस्न है दिलकश तबाही इश्क़ को मंज़ूर है | 119 |
| 87. | अपने अपने कान बंधक रख दो, आँखें फोड़ लो | 120 |
| 88. | एक औरत ही आदम की तक़दीर थी | 121 |
| 89. | हर पल संवरने सजने की फ़ुरसत नहीं रही | 122 |
| 90. | बहुत मज़ा है तेरे मिलन की रातों में | 123 |
| 91. | न जाने कौन सा पत्थर हो कब मेरे मुक़द्दर में | 124 |
| 92. | नहीं है दोष कुछ इसमें वफ़ा का | 125 |
| 93. | उस हुस्ने बला का कभी चर्चा नहीं करते | 126 |
| 94. | जब उधर से तू मेरे साथ इधर हो जाये | 127 |
| 95. | मेरे नसीब में दिन ऐसा बार बार आये | 128 |
| 96. | हमको सिला मिला है ये उनकी दोस्ती में | 129 |
| 97. | मेरे साथ कुछ दिन रहा है कोई | 130 |
| 98. | कभी बुलाओ, कभी मेरे घर भी आया करो | 131 |
| 99. | तुम्हारी अदाओं को हम जानते हैं | 132 |
| 100. | आपको हो नहीं कोई ग़म | 133 |
| 101 | मैं समुन्दर हूँ मुझको नदी चाहिये | 134 |
| 102. | माहिये | 135 |
| 103. | ग़ज़लनुमा | 138 |
| 104. | सावन आया तुम नहीं आये, नैन बन गये सावन सावन | 139 |
| 105. | रूठ गई तू जब से 'सावन' रूठ गई है बहार | 141 |
| 106. | हो गये सावन गीत मेरे ज़ख़्मी घायल अरमान | 144 |

# फ़नो-फ़िक्र की पाकीज़गी का शाइर : रमेश कँवल

■ **अनवारे इस्लाम**

एक अच्छा शैर हमें बहतर दुनिया के ख़्वाब दिखाकर तामीरे-नौ (नवनिर्माण) का जज़्बा पैदा करता है और एक होशमंद शाइर अपने तख़्लीक़ी शऊर (रचनात्मक चेतना) से अपनी निजी फ़िक्र को विस्तार देकर शैर को सामूहिक एहसास में बदल देता है। उसके शैर हमें चौंकाते या हमारे ज़ेह्न पर हमला नहीं करते बल्कि हमारे दिलो-दिमाग़ में उतरकर अपने ऐतिमाद में ले लेते हैं और ऐसे हालात में शाइर की फ़िक्र हमारे एहसास से हम आहंग होकर नई फ़िक्री तहरीक (आन्दोलन) को जनम देती है।

दुनिया में आने वाली तब्दीलियों से शाइरी या कविता कभी अप्रभावित नहीं रही और न ही रह सकती है। हर संजीदा रचनाकार के यहाँ हर सतह पर उसकी सोच के साथ भाषा, लहजा, प्रतीक और इशारे सभी में वक़्त के अनुरूप तब्दीलियों का आना स्वाभाविक भी है। क्योंकि उसके यहाँ ज़िन्दगी की केन्द्रीय सच्चाईयाँ शैर के साँचे में ढलकर जीवन की नदी को प्रवाहमान बनाती हैं। और ग़ज़ल की इस बहती हुई नदी में तैराक तो बहुत उतरे हुए हैं और अपनी कश्तियों को, नाहमवार मौसम के थपेड़ों का शानदार मुक़ाबिला करते हुए कामयाबी के साथ रवाँ-दवाँ किये हुए हैं। ऐसे ही लोगों की

फ़ेहरिश्त में एक शानदार शाइर का नाम बड़ी आसानी से लिया जा सकता है जिसे हम रमेश 'कँवल' के नाम से सुनते और पढ़ते रहते हैं।

आपका नाम रमेश प्रसाद और साहित्यिक नाम रमेश 'कँवल' है। आपकी पैदाइश 25 अगस्त 1953 को क़स्बा जितौरा जिला आरा (बिहार) में हुई। साहित्यिक रुचियाँ आमतौर पर बचपन में ही पैदा हो जाती हैं जिन पर माहौल और कहीं-कहीं विरासत का भी असर रहता है। यहीं से साहित्य के बीज प्रस्फुटित होना शुरू हो जाते हैं। ऐसा ही श्री रमेश कँवल के साथ भी हुआ। यही कारण है कि श्री कँवल ने अपनी ग़ज़लों, गीतों और माहियों के साथ एक लम्बा सफ़र तय करते हुए अनेक प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्थानों से सम्मान और पुरस्कार प्राप्त किये हैं जिनमें 'फ़िराक़ गोरखपुरी राष्ट्रीय शिखर सम्मान' और 'दुष्यन्त कुमार स्मृति पुरस्कार' प्रमुख हैं। दूसरी तरफ यह भी उल्लेखनीय है कि श्री कँवल ऐसे ग़ज़लकार हैं कि जिन्हें देश की तमाम और निश्चित ही प्रतिष्ठित उर्दू-हिन्दी की पत्रिकाओं ने समान रूप से ससम्मान प्रकाशित किया है। आज हिन्दी के साथ ही देश में उर्दू की कुछ ऐसी पत्रिकाएँ हैं जिनमें छपने के लिए शाइर तरसते हैं और इन पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाले के लिए यह बात उसके अच्छे ख़ुशफ़िक्र शाइर होने की ज़मानत मानी जाती है। यहाँ सब तो नहीं लेकिन कुछ पत्रिकाओं के नाम लेना चाहूँगा कि ये वे पत्रिकाएँ हैं जो बहुत जाँचने-परखने के बाद ही शाइरों का नोटिस लेती हैं जिनमें शबख़ून (इलाहाबाद), परवाज़ (लुधियाना), अल्फ़ाज़ (अलीगढ़), तामीर (दिल्ली), गुलबाँगे-अदब (मुम्बई), सबरस (हैदराबाद), शीराज़ा (कश्मीर), पासबान (चन्डीगढ़), रगे-संग (कानपुर), ज़बानो-अदब (पटना) यह सूची तो और भी तवील है और इसके साथ हिन्दी पत्र-



पत्रिकाओं की भी एक लम्बी फ़ेहरिस्त है जहाँ आज भी श्री कँवल की ग़ज़लें अपनी ख़ुश्बू बिखेर रही हैं।

श्री कँवल के यहाँ हालाकि विशेष तरक़्क़ी पसंदी और जदीदियत (अत्याधुनिकता) का एहसास भी नुमाया तौर पर महसूस होता है। साथ ही साथ रिवायत की पासदारी के साथ अपने मज़मून को कुछ इस तरह से शेर में पिरोते हैं कि ताज़गी के साथ-साथ ज़िन्दगी को बदलने और ख़ूबसूरत बनाने की प्रेरणा यक़ीनी तौर पर मिलती है --

**ग़ल्तियों से सबक़ लीजिए रात-दिन,**
**कामयाबी की राहों में खो जाईए।**

या

**तरन्नुम, सलीक़ा, फ़नो-फ़िक्र भी,**
**ग़ज़ल में सुख़न बा अदब चाहिए।**

श्री कँवल के यहाँ ऐसे अश्आर की काफ़ी तादाद मिलती है जिनमें फ़नो-फ़िक्र की पाकीज़गी के साथ एक पैग़ाम भी मिलता है। इसका सबब शायद यही है कि वे एक अदब दोस्त तो हैं ही, एक इन्सान दोस्त भी हैं जो आलमे-इन्सानियत की फ़लाह और बहबूद (कल्याण) का ख़्वाब पाले हुए हैं।

श्री कँवल ने ग़ज़लों के अलावा गीतों और माहियों में भी अपने फ़न का इज़्हार किया है लेकिन ग़ज़ल उनकी महबूब सिन्फ़े-सुख़न (प्रिय विधा) है और चूँकि वो ग़ज़ल की रिवायत और उसके मिज़ाज से पूरी तरह वाक़िफ़ हैं इसीलिए आसान से आसान ज़बान और बोलचाल वाली भाषा में अपनी बात कह जाते हैं और ऐसा करते हुए इस ख़ूबसूरती से हिन्दी-उर्दू और कहीं-कहीं देशज शब्दों का इस्तेमाल भी कर जाते हैं

कि हमारी मिली जुली गंगा-जमुनी तहज़ीब का मज़ा आ जाता है।

**दिन को दिन, रात मत लिखना,**
**जो हो अनुचित वो बात मत लिखना।**

**बेलिबासी माप है सौन्दर्य का,**
**शील-लज्जा आज का ज़ेवर नहीं।**

**मुझको भी है वेदना सिद्धार्थ सी,**
**मुक्त, चिन्ता-भय से मेरा घर नहीं।**

ऊपर के शैरों में आए हुए शब्द-अनुचित, सौन्दर्य, सिद्धार्थ कुछ ऐसी आवाज़ें हैं जिन्हें आमतौर पर शैर का मिज़ाज कुबूल नहीं करता लेकिन ये रमेश कँवल की शैरगोई में महारत का ही सुबूत है कि उन्होंने ख़ूबसूरती से इनका या और भी ऐसे अनेक शब्दों का इस्तेमाल कर भाषा पर अपनी गिरफ़्त का सुबूत पेश किया है।

कँवल के यहाँ ऐसा क़तई नहीं लगता कि उन्होंने शैक़िया ग़ज़लें कही हैं बल्कि उनके यहाँ एक फ़िक्र है और उसे व्यक्त करने का उनका अपना तरीक़ा है जिसे वे शैर के साँचे में सलीक़े से ढाल देते हैं जो इस बात की अलामत है कि वे ग़ज़ल की न केवल समझ बल्कि अच्छी पकड़ भी रखते हैं।

यह देखकर और भी ख़ुशी होती है कि रमेश कँवल बिहार की हुकूमत में बड़े आफ़िसर यानी अपर जिला दण्डाधिकारी (विधि व्यवस्था) जैसे महत्वपूर्ण ओहदे पर फ़ाइज़ हैं। ज़ाहिर है कि यह महत्वपूर्ण ओहदा अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा करने के लिए काफ़ी समय माँगता होगा।



बावजूद इसके वे शैरगोई भी ख़ूब कर लेते हैं। क्योंकि पहले भी उनकी दो किताबें 'लम्स का सूरज' उर्दू में और 'सावन का कँवल' हिन्दी में प्रकाशित हो चुकी हैं। इसके साथ ही 'रंगारंग शाइरी' (संपादक प्रकाश पंडित) 'ग़ज़ल इन्टरनेशनल' (संपादक मंसूर उस्मानी) 'बिहार में जदीद ग़ज़ल' (संपादक अताउल्लाह ख़ाँ अलवी) और 'ग़ज़ल... दुष्यन्त के बाद' (संपादक दीक्षित दनकौरी) जैसे अनेक महत्वपूर्ण और चर्चित ग्रन्थों में आपकी ग़ज़लें संकलित हैं।

मैं श्री रमेश कँवल की इस तीसरी कृति **'शोहरत की धूप'** जो उन्होंने अपनी शरीके-हयात मंजू के नाम मंसूब की है, इसके प्रकाशन पर पेशगी में मुबारकबाद कहते हुए कामना करता हूँ कि यह ख़ूबसूरत किताब मक़्बूले-ख़ासो-आम होकर तादेर पाठकों और साहित्य प्रेमियों, ग़ज़ल नवाज़ लोगों के साथ लम्बा सफ़र तय करे, आमीन!

**10 मार्च 2013**

**अनवारे इस्लाम**
सी-16, सम्राट कॉलोनी
अशोका गार्डन, भोपाल-23
मोबाइल : 09893663536

# रूमानियत की ख़ुशबू से लबरेज़ है शोहरत की धूप

■ **विजेन्द्र शर्मा**

ग़ज़ल के पिछले तीन सौ साला माज़ी पर नज़र डालें तो रिवायती और जदीद ग़ज़ल के बीच एक बड़ा फ़ासला नज़र आता है। हमारे अहद के बहुत से शाइरों ने इस फ़ासले को कम करने की कोशिश की है और ऐसी ही एक नायाब कोशिश जनाबे रमेश कँवल ने अपनी शाइरी में की है। 'शोहरत की धूप' की पहली ग़ज़ल ही शाइरी के एक नए ज़ायके से तआरुफ़ कराती है :-

गुलों की ताज़गी हूँ
मैं शबनम की नमी हूँ

दिसम्बर का हूँ सूरज
मई की चाँदनी हूँ

ग़ज़ल में शाइर अपने और अपने महबूब के लिए तरह-तरह की उपमाओं का प्रयोग करते हैं। कभी झील, कभी चाँद, कभी घटा, कभी कँवल मगर कँवल साहब ने ग़ज़ल को नयी तशबीह से



मुख़ातिब किया है :-

रहबरे क़ौम, रहनुमा तुम हो
ना उमीदों का आसरा तुम हो
मैं सियासत की बेईमान गली
और रिश्वत की अप्सरा तुम हो

चाँद और चाँदनी जैसे लफ़्ज़ों के ख़ूबसूरत मोतियों से बहुत से सुख़नवरों ने ग़ज़लों की मालाएँ बनाई हैं मगर रमेश कँवल इन दोनों लफ़्ज़ों से प्रणय का वो मंज़र खड़ा करते हैं कि बस इस शे'र का हिस्सा होने का दिल करता है :--

चाँदनी बिस्तर पर इतराने लगी
चाँद बाँहों में नज़र आने लगा

आज की शाइरी में ग़ज़ल की फ़िज़ा उदास-उदास सी नज़र आती है, कहीं बच्चों के खिलौनों की फ़िक्र, कहीं रोटी के इंतज़ाम की चिंता, कहीं दैरो-हरम के झगड़े और इन सब के बीच ग़ज़ल की असली तस्वीर जो धुँधली हो गयी है उसे रमेश कँवल साहब ने फिर से साफ़ करके एक ख़ूबसूरत फ्रेम में लगा दिया है :--

बदन में तमाज़त तेरे जिस्म की
मेरे होंठो पर तेरे लब चाहिए

एक तरफ सरकारी मसरुफ़ियात और दूसरी तरफ़ शाइरी, ये दोनों चीज़ें एक नदी के दो कनारों की तरह हैं मगर कँवल साहब के अन्दर का शाइर अपने शाइरी के जुनून की कश्ती पे सवार होकर बड़ी आसानी से इन दोनों किनारों के बीच आता-जाता रहता है! 'शोहरत की धूप' में ज़िन्दगी के तमाम मौज़ुआत को कँवल साहब ने ग़ज़ल बनाया है

और मेरी इस बात की तस्दीक़ उनके ये अशआर करते हैं :--

काँच का घर उसे याद आयेगा
खूब पछतायेगा पत्थर इक दिन

शोहरत की धूप छत की बुलंदी में खो गयी,
शबनम की बूँद-बूँद से जलने लगी है शाम।

मुहब्बत का मुश्किल फ़लसफ़ा कभी लैला मजनू से लेकर शीरीं फ़रहाद तक को समझ में नहीं आया मगर रमेश कँवल इसे बड़े आसान से लफ़्ज़ों में आसानी के साथ बयाँ कर देते हैं :--

फ़लसफ़ा प्यार का कितना आसान है,
जब मनाये कोई मान भी जाइए।

अपनी ग़ज़लों में कँवल साब महबूब की खुश्बू से तन-बदन सींच कर उसे ख़ुशगवार करना चाहते हैं, इनका छुपा हुआ दर्द हूबहू सावन से मिलता है और इसमें भी शक नहीं कि इन्होंने अपनी बिगड़ी हुई तक़दीर को किसी की ज़ुल्फ़ों को ख़ुद पर बिखरा कर सँवारा है! कँवल साहब को पढ़ने के बाद ये भी अहसास हुआ कि ज़ुबान पर इनकी ज़बरदस्त पकड़ है और इन्होंने तज़्रबात के मक्तब में भी पढ़ाई की है वो पढ़ाई जिसकी कहीं कोई किताब नहीं होती और न ही वो तालीम किसी मदरसे में मिलती है!

अनूठी ग़ज़लों के इस ख़ज़ाने में ऐसे बहुत से शे'र हैं जो पाठक को सोचने पर मजबूर कर देते हैं और ऐसे अशआर भी बहुत हैं



जो पाठक को रुमान की दुनिया में सैर करा देते हैं!

अब मुन्तज़िर नहीं हूँ मैं खिड़की से धूप का
अच्छा है मेरे सर पे कोई छत नहीं रही

आख़िर में इसी दुआ के साथ कि 'शोहरत की धूप' की ख़ुशबू अदब के हर गोशे तक फैले और शोहरत की उन बलंदियों को भी छू ले जिसका तसव्वुर शायद ख़ुद रमेश कँवल साहब ने भी न किया हो, आमीन।

सबको कहाँ नसीब है, ये शुहरत की धूप!
हल्का हो किरदार तो, झुलस जाय है रूप!!

सीमा सुरक्षा बल, बीकानेर
मो. 09414094122

मेरी बात...

# शोहरत की धूप में मसरूफ़ियत का सफ़र

मेरा पहला मजमुआ (ग़ज़ल संग्रह) लम्स का सूरज 1997 में शाया (प्रकाशित) हुआ। लम्स का सूरज देवनागरी लिपि में नहीं था इसलिए दोस्तों की आरज़ू थी कि मैं इसे देवनागरी में प्रकाशित कराऊँ। दोस्तों की इच्छा का समादर करते हुए उसी साल 'सावन का कँवल' प्रकाशित हुआ। लगभग 16 साल हो गए और अब एक भी प्रति मेरे पास नहीं है कि किसी को दे सकूँ। इस बीच दूसरे ग़ज़ल संग्रह की चाहत भी दोस्तों के मन में जाग उठी। कुछ ग़ज़लें इन सोलह वर्षों में हुईं। उन्हें 'सावन का कँवल' में सम्मिलित कर के तीसरा ग़ज़ल संग्रह 'शोहरत की धूप' आप के हाथों में हैं।

ग़ज़ल शायरी का बेहतरीन अंदाज़ है। रिवायती लबो लहजा ग़ज़ल की आबरू है, लेकिन ग़ज़ल के रिवायती मौजू से हटकर दिलों की अनुभूतियों को आधुनिक उपमाओं एवं उपमान के साथ नर्मो- नाजुक लहजे में समय के सुर पर पेश करना ग़ज़ल की शान और जान है। आज का इन्सान अपनी व्यस्तताओं एवं प्राथमिकताओं की कश्मकश से जाँ-ब-लब है। मोहब्बत की चाँदनी अजीज़ है उसे लेकिन ग़रीबी, भूख, बेरोज़गारी कुंठा एवं तनाव की धूप उसे परेशान किये हुए है। देश के रहनुमाओं के व्यवहार उसे मायूसी के जंगल में भटकने पर मजबूर कर रहे हैं। फिर भी



दिल, दिल है वह ख़ूबसूरत अहसास की चादर से निकलना ही नहीं चाहता। प्यार, मिलन, जुदाई, इंतज़ार, यादें, शिकवा, शिकायत, बेबसी, मायूसी आज भी जज़्बात को मुतास्सिर करते हैं। आज भी क़ुदरत और औरत का हुस्न दिलों में गुदगुदी पैदा करता है। महबूबा आज भी दिलकश मंज़र पेश करती है। ख़ूबसूरत अहसास जगाती है।

शेरो शायरी की तरफ़ मेरा रुज्हान बचपन से है। फिल्मी गानों को सुनने के बाद मेरा मन कहता था मुझे भी ऐसे गाने लिखने चाहिए, गाने बंधन में बँधने लगे शेर कहने की तमन्ना जागती रही। पहली ग़ज़ल 1972 में परवाज़ (लुधियाना) में शाया हुई। उन्हीं दिनों उर्दू लिपि भी सीखना शुरू किया। 'वफ़ा' सिकंदरपुरी के इस्लाह से शुरू हुआ शायरी का सफ़र गेसू-ए-बंगाल की सरहदों से निकल कर असीर-ए-जुल्फ़े -बिहार हो गया। जनाब प्रोफेसर हफ़ीज़ बनारसी साहब मरहूम एवं प्रोफेसर तल्हा रिज़वी बर्क़ दानापुरी साहब ने मुझे शेरो सुखन की बारीकियों का अहसास कराया। धीरे-धीरे मैं भी आरा (बिहार) की अदबी सरगर्मियों का हिस्सा बनने लगा एवं यह कहने में मुझे कोई गुरेज़ नहीं कि बेरोज़गारी के दिनों ने मेरी शायरी को परवान चढ़ाने में अहम् रोल अदा किया।

अब तक न मिली नौकरी कोई भी कँवल को,
हाथों की लकीरों के अजब ठाट रहे हैं।

लेकिन जब बिहार लोकसेवा आयोग के इंटरव्यू के दौरान एक मेम्बर ने मुझसे मेरा शग़ल पूछा तो मेरे लबों पर यह शेर मचल उठा...

'फिर रहा हूँ दर बदर ज़ख़्मों की चादर ओढ़कर,
आजकल कुछ मेहरबाँ यूँ गर्दिशे-अय्याम है।'

बस फिर क्या था। सारे मेम्बरान की वाहवाही तो मिली ही एवं अब ऐसा महसूस होता है कि शायरी के इसी शौक़ ने मेरे हाथों से बेरोज़गारी की

लकीरें मिटा दीं क्योंकि मैं सेलेक्ट कर लिया गया था।

आज शेरो शायरी की बदौलत मेरी ज़िन्दगी में शोहरत की धूप खिल रही है, पहले मैं सोचता था कि जब मुझे नौकरी मिल जाएगी तब मैं भरपूर शायरी करूँगा, लेकिन ऐसा नहीं हो सका। शायरी कभी कभार होती रही लेकिन अहसास के पैरहन लहराते रहे। दिल की कसक कसमसाती रही। होंट गुनगुनाते रहे। जब मैं भागलपुर में पदस्थापित था तब मुझे अदबी माहौल मयस्सर हुआ एवं डॉक्टर मनाज़िर आशिक़ हरगान्वी साहब की काविशो-कोशिश के बायस मेरे दोनों मजमुए मंज़रे-आम पर आ सके।

प्रखंड विकास पदाधिकारी से शुरू डिप्टी कलेक्टर का सफ़र अपर जिला दंडाधिकारी की बुलंदियों तक जा पहुँचा लेकिन गाहे बगाहे शेर कहते रहने के बावजूद मैं कोई ग़ज़ल संग्रह प्रकाशित नहीं करा सका। सुख़नवर के जरिये जनाब अनवारे इस्लाम साहब से ताल्लुक़ात बढ़े तो उन्होंने 'शोहरत की धूप' प्रकाशित करवाने पर रजामंदी ज़ाहिर की। उन्हीं की काविशो-कोशिश का नतीजा है कि मेरा तीसरा ग़ज़ल संग्रह आपके हाथों में है।

'शोहरत की धूप' में रिवायती लबो लहज़ा से परहेज़ तो नहीं किया गया है, लेकिन जदीद अंदाज़ में नए इस्तआरों, उपमाओं और बिम्बों को पेश करने की कोशिश की गयी है...

रिश्वत की अप्सरा, फ़स्ले-बेरोज़गारी, क़हक़हों के ट्यूब, फ़ासलों के दीये। जुगनुओं का लिबास, ख़ुशबुओं की मंडी, लज़्ज़त का सहन, ज़िद का बिस्तर, बदन की तमाज़त, शोहरत की शहज़ादी, होंटों की नैया, गालों की नदी, जिस्म के अशआर, हौंसलों के पाँव, बेबसी की धुंध, ख़िरद की धूप, दिल की घाटियों, अजनबीयत की दीवार, अहसास की चादर, बेरोज़गारी की सुलगती रेत, हौसलों के शहर, आस्थाओं के महल, दूरियों की धूप, ख़्वाब का मौसम, अहसास की तितलियाँ, यादों का टेप, मुलाक़ातों का मौसम, धुंध के



पर्वत, लम्हों की दीवार, ज़ख़्मों की चादर, मछलियों की टोलियाँ, पत्थर की नालिश, दर्पण का वसीला इत्यादि में कुछ अलग अंदाज़ में नयी बात कहने की कोशिश की गयी है।

लगभग तीन साल से पटना में ए.डी.एम. लॉ एंड आर्डर की जिम्मेदारियाँ निभाते हुए शेरो-शायरी का शौक़ छूट नहीं सका है मुझसे, 'शोहरत की धूप' का कोई शेर अगर आपके अंतर्मन को छू सका हो या आपके अहसास का तर्जुमान बन सका हो तो मैं समझूँगा कि मसरुफ़ियत की नाव में सफ़र करने के बावजूद शेर कहते रहने का शौक़ मुझे सुख़न का सलीक़ा अता कर सका और मेरे अशआर में शेर कहने का हुनर दस्तक देने लगा है।

होली 27 मार्च, 2013 **रमेश कँवल**

# ग़ज़लें



जुनू हूँ, आशिक़ी हूँ,
बशर हूँ, बन्दगी हूँ।

बज़ाहिर बेरुखी हूँ,
वफ़ा की बेबसी हूँ।

गुलों की ताज़गी हूँ,
मै शबनम की नमी हूँ।

शरीके-ज़िंदगी हूँ,
मैं मस्ती की नदी हूँ।

दिसंबर का हूँ सूरज,
मई की चाँदनी हूँ।

निहारो रात-दिन तुम,
मैं इक सूरत भली हूँ।

हया सिंगार मेरा,
कली की सादगी हूँ।

गवाही मुजरिमों की,
अदालत में खड़ी हूँ।

मुहब्बत का हूँ क़ायल,
'कँवल' इक आदमी हूँ।



मुस्कराऊँगा, गुनगुनाऊँगा,
मैं तेरा हौसला बढ़ाऊँगा।

रूठने की अदा निराली है,
जब तू रूठेगा, मैं मनाऊँगा।

क़ुरबतों के चिराग़ गुल करके,
फ़ासलों के दिये जलाऊँगा।

जुगनुओं-सा लिबास पहनूँगा,
तेरी आँखों में झिलमिलाऊँगा।

मेहबाँ होगा जब वो जाने 'कँवल',
उसकी गुस्ताख़ियाँ गिनाऊँगा।

ख़ूबसूरत लगा चाँद कल,
मैंने उसको सुनाई ग़ज़ल।

ख़्वाब की झील में ले गई,
ख़ूबसूरत सी उसकी पहल।

शहर में फिर धमाका हुआ,
गाँव कस्बे गये फिर दहल।

ख़ूबसूरत खिलौनों को छू,
सारे बच्चे गये कल मचल।

डायबेटिज का मत साथ दे,
तू सवेरे-सवेरे टहल।

सादगी ने किया बेज़ुबाँ,
क्या बयाँ आपका है 'कँवल'।



तू उधर था, इधर हो गया,
ख़ूबसूरत सफ़र हो गया।

आँख नम हो गई क्यों तेरी,
क्या कोई दर बदर हो गया।

चाँदनी खिड़कियों पर मिली,
चाँद आशुफ़्ता सर हो गया।

बेबसी बेरुखी बन गई,
जब से मैं मोतबर हो गया।

मुझ पे उसका करम है 'कँवल',
वो मेरा हमसफ़र हो गया।

इक नशा सा ज़ह्न पर छाने लगा,
आपका चेहरा मुझे भाने लगा।

चाँदनी बिस्तर पे इतराने लगी,
चाँद बाँहों में नज़र आने लगा।

रूह पर मदहोशियाँ छाने लगीं,
जिस्म ग़ज़लें वस्ल की गाने लगा।

तुम करमफ़र्मा हुये सद शुक्रिया,
ख़्वाब मेरा मुझको याद आने लगा।

रफ़्ता-रफ़्ता यासमीं खिलने लगी,
मौसमे-गुल इश्क़ फ़रमाने लगा।

ज़ुल्फ़ की ख़ुशबू, शगुफ़्ता लब 'कँवल',
मंज़रे-पुरकैफ़ दिखलाने लगा।



फूल को ख़ुशबू, सितारों को गगन हासिल हो,
सुबह को शाम से मिलने की लगन हासिल हो।

अनसुने क़िस्सों को बेख़ौफ़ कथन हासिल हो,
ग़म के एहसास को ग़ज़लों का सुख़न हासिल हो।

आपसे मिल के मुझे ख़ुशियों का घर-बार मिले,
आपके घर को भी लज़्ज़त का सहन हासिल हो।

मेरी फ़ुरकत में उदास आप कभी हों कि न हों,
मेरी आँखों को जुदाई में चुभन हासिल हो।

मुझको हासिल हो तेरी ख़ुशबू,तेरे साथ सफ़र,
और तुझको मेरी चाहत का चमन हासिल हो।

तेरे दीदार की ठंडक मुझे गर्मी में मिले,
सर्दियों में तेरे गालों की तपन हासिल हो।

गुनगुनाता रहे रिमझिम की फुहारों में 'कँवल',
बारिशों में तेरा भीगा सा बदन हासिल हो।

रहबरे-क़ौम, रहनुमा तुम हो,
ना उमीदों का आसरा तुम हो।

मैं सियासत की बेईमान गली,
और रिश्वत की अप्सरा तुम हो।

गलियों में तलाशता हूँ शहद,
राजनीति का ज़ायक़ा तुम हो।

चौक पर की है बहस चौके में,
सेक्युलर मैं हूँ, भाजपा तुम हो।

फ़स्ले-बेरोज़गारी हैं दोनों,
मैं हूँ स्कूल, शिक्षिका तुम हो।

मुझको क्या इससे फ़र्क पड़ने का,
मैंने माना कि दूसरा तुम हो।

क़ुरबतें सीढ़ियों से उतरेंगी,
लोग समझेंगे फ़ासला तुम हो।

आवरण मैं उदासियों का 'कँवल',
न थमे जो, वो क़हक़हा तुम हो।



नाम हूँ मैं मेरा पता तुम हो,
मेरे जीने का मुद्दआ तुम हो।

मेरी सांसों का सिलसिला तुम हो,
मेरी पूजा हो, देवता तुम हो।

पत्तियों पर लिखी इबारत मैं,
फूल के होंट का लिखा तुम हो।

अनसुनी अनकही कहानी मैं,
जग में मशहूर फ़लसफ़ा तुम हो।

तुम से शौकत, तुम्ही से है शोहरत,
मैं ग़ज़ल हूँ, मुशायरा तुम हो।

सुर्ख टॉवल में भीगा-गीला बदन,
कितना दिलकश मुजस्समा तुम हो।

फूल हूँ मैं, है मुझमें आकर्षण,
तितलियों सी लुभावना तुम हो।

मैं सफ़र तुम हो मील का पत्थर,
चल रहा मैं हूँ, रास्ता तुम हो।

तुमसे मैं, मुझसे आशना तुम हो,
मैं हूँ ख़ुशबू मगर हवा तुम हो।

मैं लिखावट तेरी हथेली की,
मेरी तक़्दीर का लिखा तुम हो।

तुम अगर सच हो, मैं भी झूठ नहीं,
अक्स मैं, मेरा आईना तुम हो।

बेख़ुदी ने मेरा भरम तोड़ा,
मैं समझता रहा ख़ुदा तुम हो।

मैं हूँ मुजरिम, मेरे हो मुंसिफ़ तुम,
मैं ख़ता हूँ, मेरी सज़ा तुम हो।

सीप की आस बनके चाहूँ तुम्हें,
लाये मोती जो वह घटा तुम हो।

अपनी मजबूरियों का रंज नहीं,
बेवफ़ा मैं हूँ बावफ़ा तुम हो।

रोग बनकर पड़ा हुआ है 'कँवल',
तुम दवा हो, मेरी दुआ तुम हो।



आईये मेहरबाँ और पास आईये,
उलझनें ज़िन्दगानी की सुलझाईये।

फ़लसफ़ा प्यार का कितना आसान है,
जब मनाये कोई मान भी जाईये।

ग़लतियों से सबक़ लीजिए रात–दिन,
कामयाबी की राहों में खो जाईये।

याद रखिये गुनाहों की बेबस घड़ी,
नेकियाँ अपनी दरिया में डाल आईये।

शर्म आँखों में हो और गुस्ताख़ियाँ,
होंट ख़ामोश हों गीत भी गाईये।

बेटियों को जनम दीजिए फ़ख़्र से,
घर में बेटी बनाकर बहू लाइये।

रैलियाँ, रैलियाँ, रैलियाँ, रैलियाँ,
आईये आप भी, आप भी आईये।

मैं फ़रिश्ता नहीं मैं हूँ इन्साँ 'कँवल',
देवता जान कर पेश मत आईये।

जो अब तक न पाया वो सब चाहिए,
मुझे ज़िंदगी का सबब चाहिए।

ये मत पूछिये हम से कब चाहिए,
करम आपका रोज़ो-शब चाहिए।

बहारों का मौसम बुलाने लगा,
मुझे आपका साथ अब चाहिए।

वफ़ा से हों रौशन दिये आँख के,
तबस्सुम सजा सुर्ख़ लब चाहिए।

हुनर नेकियाँ भूल जाने का हो,
बदी याद रखने का ढब चाहिए।

तरन्नुम, सलीक़ा, फ़नो-फ़िक्र भी,
ग़ज़ल में सुख़न बाअदब चाहिए।

रहूँ साथ तेरे घड़ी दो घड़ी,
ग़ज़ब है तमन्ना अजब चाहिए।

बदन में तमाज़त तेरे जिस्म की,
मेरे होठों पर तेरे ही लब चाहिए।

नहीं दूर तक कोई इन्साँ 'कँवल',
मेरी आरज़ू है कि रब चाहिए।



ज़ख़्म पर ज़ख़्म खाता रहा हूँ,
आपको आज़माता रहा हूँ।

उसकी यादों के अलबम में खोकर,
लज़्ज़ते-ग़म बढ़ाता रहा हूँ।

बेझिझक वो मनाती है मुझको,
मैं भी उसको मनाता रहा हूँ।

देखकर दिल की खिड़की पे उसको,
मुद्दतों मुस्कुराता रहा हूँ।

गिरवी रखकर ज़मीरो-अना को,
दर बदर सर झुकाता रहा हूँ।

मैं हूँ अल्लाह की सरज़मीं पर,
सारे जग को बताता रहा हूँ।

मुश्किलों में भी मैं ज़िंदगी को,
फूल जैसा लुभाता रहा हूँ।

गुनगुनाती है वो मेरी ग़ज़लें,
गीत मैं उसके गाता रहा हूँ।

मान लेती है वो मेरी बातें,
मैं 'कँवल' उसको भाता रहा हूँ।

ग़म छुपाने में वक़्त लगता है,
मुस्कुराने में वक़्त लगता है।

रूठ जाने का कोई वक़्त नहीं,
पर मनाने में वक़्त लगता है।

ज़िद का बिस्तर समेटिये दिलबर,
घर बसाने में वक़्त लगता है।

जा के आने की बात मत कीजे,
जाने आने में वक़्त लगता है।

आज़मा मत भरोसा कर मुझ पर,
आज़माने में वक़्त लगता है।

यक-ब-यक भूलना है नामुमकिन,
भूल जाने में वक़्त लगता है।

वो अभी बन सँवर रही होगी,
उसको आने में वक़्त लगता है।

जाम पीते हैं जो नज़र से उन्हें,
जाम उठाने में वक़्त लगता है।

बेटियों को बचा के रखिये 'कँवल',
उन को पाने में वक़्त लगता है।



मिलने में तो बहुत मज़ा है,
न मिलने में लुत्फ़ बड़ा है।

इन्द्रधनुष से सपने मेरे,
तू मेरी आँखों में बसा है।

मेरी कहानी, तेरा क़िस्सा,
तेरा क्या है मेरा क्या है।

धूप मुहब्बत की उग आई,
चूम के शबनम मस्त हवा है।

कब मिलने की कोशिश छोड़ी,
दिल ने बिछड़ना कब चाहा है।

धानी पत्तों पर सूरज ने,
एक गुलाबी जाल बुना है।

इन्सानों की बात न पूछो,
क़ुदरत पर भी भारी पड़ा है।

आओ तुम्हें सावन से मिलायें,
इसमें 'कँवल' का दर्द छुपा है।

दिन को दिन लिखना रात मत लिखना,
जो हो अनुचित वो बात मत लिखना।

अपने अपनों की घात मत लिखना,
किसने खाई है मात मत लिखना।

फ़लसफ़ा कहना हुक्मरानों का,
हुक्मरानों की ज़ात मत लिखना।

चाल चलना, सँभलना, शह देना,
जज़्बए-इंबिसात मत लिखना।

अपनी औक़ात का पता देना,
दुश्मनों की बिसात मत लिखना।



ज़िंदगी नाहक उदासी भर नहीं,
हौसलों का शहर बे मंज़र नहीं।

बेलिबासी माप है सौंदर्य की,
शील, लज्जा, आज का ज़ेवर नहीं।

संगिनी मेरी नहीं है यशोधरा,
राज्य संरक्षण में उसका घर नहीं।

दिल्लगी, दिल्ली ने दिलवालों से की,
मुल्क़ में अब कोई भी रहबर नहीं।

मुझको देती है सदा मेरी दुल्हन,
कामना निर्वाण की बेहतर नहीं।

त्रस्त पाप अपराध से है वसुन्धरा,
आँख क्या अब खोलेगा शंकर नहीं।

मुझको भी है वेदना सिद्धार्थ सी,
मुक्त चिंता भय से मेरा घर नहीं।

मैंने पूछा जाने–मन क्या आओगे,
रख दिया फोन उसने ये कहकर नहीं।

तू जुदा, लहजा जुदा तेरा 'कँवल',
तेरे तेवर सा कहीं तेवर नहीं।



अपनी ख़ुशियाँ सभी निसार करूँ,
ज़िंदगी आ कि तुझसे प्यार करूँ।

आदतन तुझ पे ऐतबार करूँ,
बेसबब तेरा इन्तिज़ार करूँ।

तेरी ख़ुशबू से तन–बदन सींचू,
अपनी साँसों को ख़ुशगवार करूँ।

मुश्किलों को तेरी मैं सहल करूँ,
तेरी दुश्वारियों पे वार करूँ।

आईना ख़ौफ़ के नगर में है,
कैसे मैं सोलहो सिंगार करूँ।

बेसबब तो नहीं उदास 'कँवल',
बेवजह क्यों मैं शर्मसार करूँ।

उलझनों के गाँव में दुश्वारियों का हल भी है,
ज़हन की ख़ामोशियों में शहर की हलचल भी है।

क़ुरबतों की धूप पर अहसास का बादल भी है,
सुर्ख़ी-ए-आरिज़ की ज़द पर आँख का काजल भी है।

इक मुजस्सम हुस्न की रानाइयों का शोर है,
जिस्म के भूगोल पर इतिहास का मलमल भी है।

झील सी आँखें, दमकते होंट, ज़ुल्फ़ें दोश पर,
शाख़ पर नाज़ुक बदन के एक वर्जित फल भी है।

तय हुआ गंगोत्री से पाक गंगा का सफ़र,
अब प्रदूषण के नगर में शुद्ध गंगा जल भी है।

खाक कर डालेंगे भ्रष्टाचार के जंगल को हम,
देशहित की भावना है मन में नैतिक बल भी है।

देख 'सावन का कँवल' है मरकज़े-अहले-नज़र,
पर 'कंवल' पच्चीसवें सावन की शोहरत छल भी है।



ज़िंदगी इन दिनों उदास कहाँ,
तुझसे मिलने की दिल में आस कहाँ।

मौसमों में गुलों की बास कहाँ,
मुफ़्लिसी मेरी ख़ुश लिबास कहाँ।

लान से फूल पत्तियाँ ओझल,
तेरी यादों की नर्म घास कहाँ।

रतजगा, फूल, तारे, चाँद, हवा,
नींद बिस्तर के आस पास कहाँ।

मंदिरों में निराश उम्मीदें,
देवियाँ फिर भी हैं उदास कहाँ।

ताज़गी अब कहाँ तेरे लब पर,
मेरी आँखों में कोई प्यास कहाँ।

ख़ुशबुओं का पता तो आसाँ है,
पर हवा है 'कँवल' के पास कहाँ।

ज़ख़्म पर ज़ख़्म वह नया देगा,
रोज़ मिलने का सिलसिला देगा।

ज़ुल्फ़, लब, गाल, आँख का जादू,
ख़्वाब सारे लुभावना देगा।

शोख़ नज़रों से जब नवाज़ेगा,
हौसले दिल के फिर बढ़ा देगा।

क़ुर्ब की रोशनी में सँवरेगा,
फ़ासलों के दिये बुझा देगा।

फूल, शबनम, बहार, बादे-सबा,
ज़िन्दगानी का आईना देगा।

उसकी साँसों में मेरी ख़ुश्बू है,
किस तरह मुझको वह भुला देगा।



फ़लसफ़ा है पुराना पर सच है,
जो भी देगा तुम्हें ख़ुदा देगा।

उसकी रहमत के साये में ख़ुश हूँ,
चाहतों से मेरी सिवा देगा।

भर के बाहों में जिस्म का शोला,
एक स्पर्श में बुझा देगा।

शीरीं होटों का ज़ायक़ा देकर,
ज़िन्दा रहने का हौसला देगा।

मैं उभर आऊँगा हथेली पर,
जब भी ऐ दोस्त तू सदा देगा।

शामिले-जुर्म तो है वो भी 'कँवल',
मुझको तन्हा मगर सज़ा देगा।

बल खाती मछलियाँ हैं, सफ़र चाँदनी का है,
मस्ती है चाँद रात है, क़िस्सा नदी का है।

दिल में ख़लिश है लब पे हँसी सावन आँख में,
जो भी नसीब मुझको हुआ सब उसी का है।

तुम कह रहे हो किसकी कहानी बताओ भी,
क़िस्सा ये हू-ब-हू मेरी दीवानगी का है।

वो बेरुख़ी की धूप है, मैं बेबसी का गाँव,
मुंसिफ़ का उसको, मुझको मज़ा कचहरी का है।

तुम हो बज़िद जो साथ निभाने पे कर लो ग़ौर,
दिल का मुआमला है, नहीं दिल्लगी का है।

फूलों की पँखड़ियाँ भी हैं तितली के पर भी हैं,
यादों का है सफ़र तो वरक़ डायरी का है।

परवरदिगार जानता है उससे छूट कर,
अब कुछ अजीब हाल मेरी ज़िंदगी का है।

अंदाज़े-आशनाई से वाक़िफ़ नहीं हूँ मैं,
उसका भी लबो-लहजा 'कँवल' अजनबी का है।



क़ुरबत की तल्ख़ियों से पिघलने लगी है शाम,
अब फ़ासलों के शहर में ढलने लगी है शाम।

शोहरत की धूप छत की बुलंदी में खो गई,
शबनम की बूँद-बूँद से जलने लगी है शाम।

महफ़िल में बोलता था बहुत, शख़्स खोखला,
यह राज खोलने को उछलने लगी है शाम।

दिल्ली का शॉप-मॉल हो या शामे-लखनऊ,
अल्हड़ कुँवारियों सी मचलने लगी है शाम।

ग़ज़लों की ताज़गी से सराबोर है 'कँवल',
शे'रों के फ़िक्रो-फ़न में उबलने लगी है शाम।

गुज़रे मौसम का पता सुर्ख़ लबों[1] पर रखना,
अपनी आँखों में मेरे क़ुर्ब[2] का मंज़र[3] रखना।

तुम गये साल महीनों को संजो कर रखना,
याद आयेगी मेरी, याद बराबर रखना।

बंद करना न तअल्लुक़[4] के दरीचे को कभी,
तुम मुलाक़ात के आँगन को मुनव्वर[5] रखना।

अपनी साँसो में बसा लेना वफ़ा की ख़ुशबू,
अपने जूड़े को गुलाबों से मुअत्तर[6] रखना।

एक दस्तक तुम्हें चौंकाती रहेगी अक्सर,
इक दिया दिल के घरौंदे में जलाकर रखना।



मेरे हिस्से मे तबाही की घनी तल्ख़ी[7] है,
तुम लबे-शीरीं[8] के अमृत को बचाकर रखना।

एक जलता हुआ सूरज है मेरी ज़ात में क़ैद,
तुम भी लहराता हुआ तन का समुन्दर रखना।

गर्द जिस पर न महो-साल[9] की जमने पाये,
दिल की दीवार पे इक ऐसा कलेन्डर रखना।

वो उभर आयेगी हाथों की लकीरों मे 'कँवल',
उस के मिल जाने का अहसास बराबर रखना।

---

1. होंट 2. सामीप्य 3. दृश्य 4. संबंध 5. प्रकाशमान 6. सुगंधित 7. कटुता-कड़वाहट 8. मधुर होंट 9. महीना वर्ष।

लम्स[1] की आँधियों से जो डर जायेंगे,
कुर्ब[2] के सारे मंज़र[3] बिखर जायेंगे।

रात दरबान बन कर रहेगी मगर,
दिन निकलते ही ख़्वाब अपने घर जायेंगे।

साँसो के डूबते-उगते सूरज लिये,
उम्र की सरहदों से गुज़र जायेंगे।

जिस्म की रिश्वतें देंगे बरसात को,
फिर नये पत्ते लाने शजर जायेंगे।

उसकी यादें न कर दर-बदर ऐ 'कँवल',
बे ठिकाने ये मंज़र किधर जायेंगे।

---

1. स्पर्श 2. समीपता 3. दृश्य



आस्थाओं का मुसाफ़िर खो गया,
रास्तों की बत्तियों को क्या हुआ।

भावनाओं के समुन्दर से परे,
अक्षरों के हुस्न ने जादू किया।

दिल के दरवाज़े की साँकल खुल गई,
दस्तकों के साथ इक चेहरा बढ़ा।

पत्थरों पर घास यूँ आई उभर,
जैसे गहरे ध्यान से साधू जगा।

ज़िंदगी का कोप है दहलीज़ पर,
मेरे तन ने एक वर्जित फल चखा।

आदिवासी औरतों के गाँव में,
थोड़े दिन ही ख़्वाब का मौसम रुका।

जल बुझी साँसों की सारी तीलियाँ,
तब खंडर यह उम्र का रौशन हुआ।

इक शिला थी, एक था पत्थर 'कँवल',
दोनों के संघर्ष से चूल्हा जला।

जल गये याद के बामो-दर धूप में,
पर सलामत है दिल का खंडर धूप में।

हो न जाये कहीं बे असर धूप में,
यूँ परेशाँ है रंगे-सहर धूप में।

बेख़बर था समुंदर मगर मछलियाँ,
ऐश करती रहीं रेत पर धूप में।

फूस की खोलियों में है दहशत बपा,
ढूँढता है अमाँ[1] इक शरर[2] धूप में।

सुबह से एक साया भटकता रहा,
इक दरीचा रहा मुंतज़र[3] धूप में।

मेरे अहसास[4] की तितलियाँ खो गईं,
रफ़्ता-रफ़्ता 'कँवल' मोतबर[5] धूप में।

---

1.सुरक्षा-शांति-शरण, 2. चिंगारी 3. प्रतीक्षारत-आशान्वित
4. चेतना 5. विश्वस्त।



इक हवेली में बैचैन थे बामो-दर[1],
ख़्वाब की बस्तियों में थी इक रहगुज़र।

बालकों की परेशानी पर ग़ौर कर,
जल समाधि लगा बैठे बालू के घर।

इक सुनहरी किरन का सफ़र तय हुआ,
खुल गईं खिड़कियाँ, जाग उठा सारा घर।

अब तो तफ़रीहे-साहिल[2] भी है रायगाँ[3],
रेत पर बस गये पत्थरों के नगर।

टेप यादों का रुक-रुक के बजता रहा,
रात टेलीविजन पर थे दो हमसफ़र।

पाँव ज्वालामुखी पर दहकते रहे,
सर पे मेरे सुलगती रही दोपहर।

देखकर मेरे जहदो-अमल[4] का दिया,
मुझको आवाज़ देने लगा इक खंडर।

दौरे-हाज़िर[5] के 'इक़बालो'-'ग़ालिब' थे सब,
पर कई जानते थे न शेरी हुनर।

मैं वही, फिर वही बर्फ़बारी 'कँवल',
खिड़कियों पर मिली फिर वो बेकल नज़र।

---

1. छत-द्वार 2. समुद्र किनारे घूमना 3.व्यर्थ 4. पराक्रम
5. वर्तमानकाल



रंजिशें उभरीं, तअल्लुक़[1] के सभी दरपन चनक कर रह गये,
रुत मुलाक़ातों की आई, दो हसीं चेहरे बढ़े, लेकिन झिझक कर रह गये।

काली रातें ओढ़कर सोने लगे जब दो बदन, आई बहार,
पत्तियों की ओट में खिलते हुये दो गुल दमक कर रह गये।

आबशारे-दश्त[2] में धोकर सुनहरा जिस्म इक महवश[3] उठा,
और फिर हम डूबते सूरज की राहों में भटक कर रह गये।

हौसलों के पाँव थे, बेरोज़गारी की सुलगती रेत थी,
बेबसी की धुन्ध में तुम खो गये, हम भी भटक कर रह गये।

हादिसों की ज़र्बे-पैहम[4] ने बना डाला हमें बेजानो-बेहिस आईना,
वक़्त का चेहरा भयानक था मगर हम भागते कैसे चटक कर रह गये।

शहर की बाहों मे पलती सभ्यता बतलायेगी कि गाँव की,
सादगी और प्यार किस झुरमुट में किस डर से दुबक कर रह गये।

जब ख़िरद[5] की धूप में जलने लगे ख़्वाबे-सहर[6] दिल के 'कँवल',
हम सुकूते-दश्त[7] बन बैठे, जुदाई में सनक कर रह गये।

---

1. संबंध 2. जंगली झरना -जल प्रपात 3. चाँद के समान (प्रेयषी) 4. निरंतर चोटें 5. बुद्धि 6. प्रातःकाल का सपना 7. वन की चुप्पी ।

शाम हुई क़िश्तों मे बिखरते सूरज का मंज़र[1] उभरा,
देखते देखते स्याह समुंदर में इक सुर्ख़ नगर डूबा।

मुजरिम ही तो मुंसिफ़[2] भी था आख़िर मैं सच क्या कहता,
दोबारा मक़्तल[3] में पहुँचा, फिर मुझ पर महशर[4] गुज़रा।

छाल दरख़्तों की पहने जब लोग गुफाओं में खुश थे,
सहने-तसव्वुर[5] में सदियों पीछे का वह मंज़र झूमा।

मेरे पीछे वहमो-गुमाँ[6] की आसेबी[7] आवाज़ें थीं,
अंदेशों के जंगल से मैं रात बहुत डर कर निकला।

नैन मेरे खिड़की से किसी को देख रहे थे जाते हुये,
और शिकन की चादर ओढ़े घर में इक बिस्तर तन्हा[8]।

रात की रानी महकी कोई आया, दिल मदहोश हुआ,
क़ुर्ब[9] की ख़ुशबू फैली पल में ख़्वाबों का साग़र छलका।

काँच के घर में बंद था मैं, आवाज़ किसी की क्या सुनता,
तुम तो 'कँवल' मजबूर नहीं थे, तुम ने न क्यों पत्थर फेंका।

---

1. दृश्य 2. न्यायाधीश 3. वध स्थल 4. प्रलय 5. कल्पना का आंगन 6. भ्रम-भ्रांति 7. भुतहा 8. एकाकी 9. समीपता-निकटता।



आओ तुम आकर बसा दो मेरे ख़्वाबों के खंडर,
क्या पता कब ख़त्म हो जाये ये साँसों का सफ़र।

दिल के आँगन मे कभी मौसम मुलाक़ातों का हो,
तेरे इक स्पर्श से रौशन हों मेरे बामो-दर।

मेरे दिल की घाटियों में रू-ब-रू है आजकल,
तेरे मिलने की ख़ुशी तुझ से बिछड़ जाने का डर।

इक घड़ी भी आँख से ओझल न होने दे कभी,
तू कभी मेरे भी दर्शन को तरस जाये अगर।

जब दरख़्तों को ज़ुबाँ मिल जायेगी तब देखना,
मौसमों के क़हर से चीखेंगे ये बर्गो-शजर।[1]

मेरे मन के द्वीप में वीरानियाँ जलने लगीं,
एक नर हैरान था, इक नारी को पहचान कर।

दस्तकें दरवाज़ा-ए-अहसास पर बैचेन हैं,
और लम्हों के घरौंदों में 'कँवल' है बेख़बर।

---

1. पेड़-पत्ते।

नुक़रई[1] उजाले पर सुरमई अँधेरा है,
यानी मेरी क़िस्मत को गर्दिशों ने घेरा है।

वक़्त ने जुदाई के ज़ख़्म भर दिये लेकिन,
ज़ख़्म की कहानी भी वक़्त का ही फेरा है।

टूटते बिखरते इन हौसलों को समझाओ,
उलझनों की शाख़ों पर लज़्ज़तों का डेरा है।

आने वाला सन्नाटा मस्तियाँ उड़ा देगा,
नागिनो! सँभल जाओ सामने सपेरा है।

मछलियों की बस्ती में कितना प्यारा मौसम है,
जाल भी नहीं कोई और ना मछेरा है।

आप ही सी इक मूरत फिर है दिल के मंदिर में,
आप की अदाओं का दिल में फिर बसेरा है।

क्यों 'कँवल' को समझे हो रात की अलामत[2] तुम,
वो तो एक सूरज है, चंपई सवेरा है।

---

1. चांदी सदृश 2. प्रतीक



बिखरी हुई हयात[1] से सिमटे लिबास थे,
हम डूबती सदाओं[2] के कुछ आस-पास थे।

आँखों में अपनी मंज़रे-सद-दस्ते-यास[3] थे,
हम मौसमे-बहार से यूँ रूशनास[4] थे।

आया न कोई आशना[5] चेहरा ही सामने,
हम शहरे-ख़्वाबे-ज़ार[6] में बेहद उदास थे।

रंगीन तितलियों ने लुभाया बहुत मगर,
हम पानियों के शहर में टूटे गिलास थे।

फैली हुई थी ख़ौफ़ की इक धुन्ध चार सू[7],
जंगल के जानवर भी बहुत बदहवास थे।

लम्हों की धूप छाँव ने पहचान छीन ली,
हम आईनों के गाँव में इक देवदास थे।

तुम वहम की गुफाओं में खो जाओगे 'कँवल'
हमको भी सब कहेंगे कि निष्फल प्रयास थे।

---

1. जीवन 2. आवाज 3. निराशा के जंगल के दृश्य 4. परिचित 5. परिचित-मित्र 6. निद्रित नगर 7. चतुर्दिश

अगरचे मुझको समर्पित किसी का यौवन था,
मैं बेवफ़ा था, कहीं और मेरा तन मन था।

न छत थी और न दीवारो-दर, न आँगन था,
अभाव के घने जंगल में मेरा बचपन था।

उभरते टूटते रिश्तों का खोखलापन था,
शजर[1] शजर पे इन्हीं लज़्ज़तों[2] का गुलशन था।

वो ख़्वाबगाह[3] की ग़ज़लें सुना रही थी मुझे,
अदा-ए-ख़ास[4] से उसका खनकता कँगन था।

वरक़[5] वरक़ पे मुनव्वर[6] थीं लब[7] की तहरीरें[8],
किताबे-जिस्म का हर बाब[9] मुझसे रौशन था।

नदी ने रेत बनाया था काट कर जिनको,
उन्हीं चटानों का फिर डेल्टा पे बंधन था।

मैं ख़ुशलिबास मनाज़िर[10] सजा के लाता रहा,
मेरी ग़ज़ल का अलग लहजा था अलग फ़न[11] था।

न पूछ बेबसी उसके कुँवारेपन की 'कँवल',
हवस के नाग लपेटे बदन का चंदन था।

---

1. वृक्ष 2. आनंद 3. शयनागार 4. विषेष हाव-भाव 5. पृष्ठ-पन्ना 6. प्रकाशमान 7. होंट 8. लिखावट 9. अध्याय 10. दृश्य, 11. शिल्प-कला।



ऐ यार मेरे हिज्र के जंगल को जला दे,
और अपनी मुलाक़ात की बर्फ़ीली घटा दे।

मै कब से तसव्वुर[1] के दरीचों पे खड़ा हूँ,
कब होगा निगाहों को मयस्सर[2] तू बता दे।

मै कर्बे-जुदाई[3] के जज़ीरों में हूँ बेदम,
तू क़ुर्ब[4] की ख़ुश्बू में सनी नर्म हवा दे।

पहचान पुरानी है मगर भाँप रहा हूँ,
किस चौक पे ये शख़्स निगाहों से गिरा दे।

गिरती हुई दीवारे-वज़अ़दारी[5] के नीचे,
इन टूटते संबंधों की बुनियाद ही ढा दे।

मैं वक़्त के मलबूस[6] में बदला यूँ हर इक पल,
अब आईना हर लम्हा मेरा रूप भुला दे।

ताने हुये सोया हूँ 'कँवल' शबनमी चादर,
मुझको तो न उगते हुये सूरज का पता दे।

---

1. कल्पना 2. प्राप्त-उपलब्ध 3. विरह वेदना 4.समीपता 5. तरहदारी, किसी बात को मरते दम तक एक तरह से निबाहना 6. वस्त्र-वसन

जुनूँ की  वादियों से दिल को लौटाना भी मुश्किल है,
तुम्हें खोना भी मुश्किल है, तुम्हें पाना भी मुश्किल है।

मेरे तपते सुलगते रोज़ो-शब[1] मजबूर हैं लेकिन,
मेरे ख़्वाबों के जंगल का झुलस जाना भी मुश्किल है।

समझदारी का मौसम ले उड़ा तिफ़्ली[2] की  रअ़नाई[3],
खिलौने दे के अब बच्चे को बहलाना भी मुश्किल है।

निगाहो-दिल में हंगामों के आसेबी[4] जज़ीरे[5] हैं,
मगर चेहरे के सन्नाटों को झुठलाना भी मुश्किल है।

बहुत मुश्किल है वापस ले के आना ख़ुशियों का सूरज,
उदासी के घने कोहरे को बिखराना भी मुश्किल है।

हक़ीक़त आशना[6] लोगो ने भी झूठी गवाही दी,
'कँवल' सच्चाई को आईना दिखलाना भी मुश्किल है।

---

1. रात दिन, हर समय 2. बचपन 3. सुन्दरता, शोभा 4. भूत-प्रेत वाला 5. द्वीप-टापू 6. परिचित- मित्र ।



जोबन के दरीचों पे कोई पर्दा नहीं था,
उस शोख़ को जिस्मों की नुमाइश[1] पे यक़ीं था।

वो आरिज़ो लब[2], वो घनी ज़ुल्फ़ें खुले बाज़ू,
ख़ुशबू का समुन्दर मेरी साँसों के करीं[3] था।

आहट, कोई दस्तक, वो सिमटना, वो बिछड़ना,
कुछ इसके सिवा और निगाहों में नहीं था।

ख़ुशियों के दरो-बाम[4] थे माज़ी[5] के खंडर में,
इमरोज़[6] की बस्ती में ग़म आलूद[7] मकीं था।

क़िस्तों में निगलता रहा किरनों का बवंडर,
यादों का सफ़र बर्फ़  की बाहों में कहीं था।

वो नाज़, वो अँदाज़, वो ग़म्ज़े[8] वो इशारे,
ईमान की दौलत पे कहाँ मुझको यक़ीं था।

दावत थी 'कँवल' उसकी हर एक शोख़ अदा में,
पैकर[9] नहीं वह इश्क़ का तशहीरे-हसीं[10] था।

---

1. प्रदर्शनी 2. कपोल और होंट 3. निकट 4. द्वार और छत 5. भूतकाल 6. वर्त्तमान 7. दुःख से ओत प्रोत  8. हाव भाव, नखरा 9. आकृति, काया 10. मनोरम विज्ञापन।

जब समुन्दर में सूरज कहीं सो गया,
पंछी वापस हुये हर मकीं सो गया।

अब्र आलूद[1] मंज़र हवा ले उड़ी,
ख़ुश्क खेतों में ख़्वाबे-हसीं सो गया।

आँख मलता हुआ वहमे-दिलकश[2] उठा,
बिस्तरे-शब[3] पे जिस्मे-यक़ीं[4] सो गया।

जाने क्या बात थी रात ठहरी नहीं,
सुबह जागी, सुकूते-ज़मीं[5] सो गया।

अजनबीयत की दीवार रौशन रही,
वह कहीं सो गया मैं कहीं सो गया।

उसकी आँखों ने ताईदे-इक़रार[6] की,
थरथराते लबों पर 'नहीं' सो गया।

ऐसी ख़ुशबू उड़ी दो बदन से 'कँवल',
चाँद महवे-ख़याले-हसीं[7] सो गया।

---

1. मेघाच्छादित 2. मनोहर आशंका 3. रात का बिछौना 4. विश्वास की वधू 5. धरती की शांति 6. स्वीकृति का समर्थन 7. सुन्दर कल्पनाओं में तल्लीन होना।



लिबासे-ज़िंदादिली[1] तार तार था कितना,
ग़िलाफ़े ज़ीस्त[2] में वह बेक़रार था कितना।

हसीन दर्द का सोलह सिंगार था कितना,
मुझे हयात[3] की रानी से प्यार था कितना।

फ़सीले-शब[4] से इरादों के पाँव रुक न सके,
तुलू-ए-सुबह[5] का मुझको ख़ुमार था कितना।

मै सुन रहा था दरे-दिल पे दस्तकें उसकी,
विरह का वातावरण ख़ुशगवार था कितना।

मेरी तलाश में उसकी निगाहे-बेकस[6] थी,
वो पंख दे के मुझे अश्कबार था कितना।

न रास आ सकी जिस्मों की दोपहर उसको,
लबों की धूप में वो बेक़रार था कितना।

सफ़ीना[7] साँसों का था मौत के भँवर में 'कँवल',
किसी का फिर भी मुझे इंतज़ार था कितना।

---

1. प्रसन्नचितता का वस्त्र 2. जीवन का परिधान 3. जीवन 4. रजनी की प्राचीर 5. प्रभात का उदय 6. मजबूर दृष्टि 7. नौका।

सुनहरी यादों के जंगल में खो गई होगी,
वो गुज़रे लम्हों की चौखट पे सो गई होगी।

मैं अपनी ज़िद के दरीचे से झाँकता ही रहा,
अना[1] के मोड़ से वापस वो हो गई होगी।

दराज़ बाहों के पिंजड़े में फड़फड़ाती हुई,
वो देवदासी दुपट्टा भिगो गई होगी।

ये सोच कर कि इक स्पर्श में मिटा देगा,
वो एक मौज किनारा डुबो गई होगी।

मुझे भी नीला समुंदर निगल रहा है 'कँवल',
वो चाँदनी भी जज़ीरों[2] में खो गई होगी।

1. अहम, अंहकार 2. द्वीप, टापू



किसी की आँखों में बेहद हसीन मंज़र था,
मेरा बदन था जज़ीरा[1] वो इक समुंदर था।

वो जलते पंख लिये बढ़ रहा था मेरी तरफ़,
मेरी रगों में ठिठुरता हुआ दिसंबर था।

जो एक जुगनू सा बुझता रहा, दमकता रहा,
वो अजनबी तो शनासाओं[2] से भी बेहतर था।

उदास सूर्यमुखी खो गई थी सूरज में,
थकन से चूर मगर रौशनी का बिस्तर था।

बराये नाम तो पानी था उसके चारों तरफ़,
मगर जो ठहरा तो सहरा[3] में वह शनावर[4] था।

अजीब बात बताई है जोगनों ने हमें,
वो बूढ़ा साधू नहीं खौफ़नाक ख़ंजर था।

'कँवल' थीं तेज हवायें मेरे तआकुब[5] में,
मै अपने वक़्त का जलता हुआ कलेंडर था।

1. द्वीप-टापू 2. परिचित, 3. मरूथल, 4. तैराक, 5. पीछा करती हुई।

हरी पत्तियों पर फिसलती रही,
हसीं धूप शाख़ों पे फलती रही।

ज्वालामुखी क़हर ढाते रहे,
नदी पर्वतों से निकलती रही।

वरक़[1] दर वरक़ मैं ही रौशन रहा,
वो अलबम पे अलबम बदलती रही।

तमाज़त[2] अजब नर्म कलियों में थी,
हवा पंखा रह रह के झलती रही।

किसी दस्तख़त की करामात[3] थी,
मेरी जिंदगी हाथ मलती रही।

हवस की निगाहें ख़रीदार थीं,
पकौड़ी वो मासूम तलती रही।

'कँवल' इक समुंदर था हैरतज़दा,
नदी कैसे उसको निगलती रही।

---

1. पृष्ट–पन्ना, 2. उष्मा, गर्मी 3. चमत्कार ।



आस्माँ से छिन गया जब चाँद तारों का लिबास,
शबनमी कपड़ों में लिपटी थी ज़मीं की नर्म घास।

धुन्ध के पर्वत पिघलते देखकर ख़ुश थीं बहुत,
दोपहर को ताज़ा कलियाँ भी हुईं पर महवे–यास[1]।

तोड़कर दीवार लम्हों की हुआ जब रू–ब–रू'
मैं भी अफ़्सुर्दा[2] था, उसका दिल भी था बेहद उदास।

मौजज़न[3] इमरोज़[4] का खारा समुंदर था बहुत,
तेरी यादों के जज़ीरे थे मगर कुछ आस–पास।

जब बदन कलियों का सूरज की किरण छूने लगी,
ओस की बूँदों ने पाया ख़ुद को बेहद बदहवास।

मेरे तन में ख़ेमाज़न[5] थी इक सुलगती दोपहर,
वो भी था पहने हुये बर्फ़ीले मौसम का लिबास।

जिस्म की चादर लपेटे था 'कँवल' वह गुलबदन,
मैं भी उससे रेज़ा रेज़ा[6] हो रहा था रूशनास।[7]

---

1. नैराश्य में तल्लीन, 2. उदास, 3. बहता हुआ, 4. वर्तमान, 5. डेरा डाले हुए, 6. टुकड़े–टुकड़े,
7. परिचित।

मुक़द्दर का सूरज घटाओं में था,
मेरा हाले-ख़स्ता ख़लाओं में था।

सभी हँस रहे थे, मुझे देखकर,
बिखरता हुआ मैं हवाओं में था।

शिकन की तहें मेरे माथे पे थीं,
कि दरपन भी ना आशनाओं में था।

मै सुक़रात था चीख़ता किस तरह,
सुकूते-अजब[1] भी दिशाओं में था।

मेरे होंटों पर थी लबों की तपन,
मुझे चैन ज़ुल्फ़ों की छावों में था।

कोई शहर में था परेशाँ बहुत,
कोई शख़्स बेचैन गाँवों में था।

शबो-रोज़[2] बिखरी हुई ज़िंदगी,
'कँवल' इससे बेहतर गुफाओं में था।

1. आश्चर्यपूर्ण ख़ामोशी, 2. रात दिन।



वह जो लगता था पयम्बर इक दिन,
अपना ही भूल गया घर इक दिन।

काँच का घर उसे याद आयेगा,
ख़ूब पछतायेगा पत्थर इक दिन।

ढंड पहुँचायेगा, राहत देगा,
रेत का गर्म ये बिस्तर इक दिन।

लाज रख लेगी तेरे जज़्बों की,
मेरे अहसास की चादर इक दिन।

आतिशे-वक़्त में तपते तपते,
हीरे बन जायेंगे कंकर इक दिन।

लुत्फ़े-शोहरत मुझे दे जायेगा,
तपते लफ़्ज़ों का समुंदर इक दिन।

पाप जल जायेगा दुनिया का 'कँवल',
आँख जब खोलेगा शंकर इक दिन।

1. समय की अग्नि, 2. ख्याति का हर्ष, 3. शब्दों ।

जब से वह हो गई इक छैल-छबीले से अलग,
उसका दिल हो गया ख़ुशियों के क़बीले से अलग।

ख़ुदशनासाई[1] हो दरपन के वसीले[2] से अलग,
ग़ैर मुमकिन है कि हो दीप फ़तीले[3] से अलग।

रस भरे होटों की क़ुरबत[4] का है ये लुत्फ़ो-करम[5],
लब मेरे हो न सके प्यास के टीले से अलग।

अब भी इम्रोज[6] का सूरज है जवाँ और दिलकश,
तुम कभी आओ तो माज़ी[7] के तबीले[8] से अलग।

ज़र्द[9] चेहरे की उदासी का है सैलाबे-रवाँ[10],
रंग अब कोई नज़र में नहीं पीले से अलग।

आतिशे-वक्त ने छोड़ा न कोई सब्ज़ लिबास,
ख़ुश्क खेतों में निशाँ हैं सभी गीले से अलग।

गर तुझे फ़िक्रे-सुख़न[11] है तो 'कँवल' आ इक दिन,
अपने अशआर[12] के महदूद[13] क़बीले से अलग।

---

1. स्वयं परिचय 2. साधन, माध्यम 3. बत्ती 4. सामीप्य 5. आनंद, कृपा 6. वर्त्तमान 7. भूतकाल 8. अश्वशाला 9. पीला 10. गतिमय बाढ़ 11. कविता का ख़याल 12. शेर का बहुवचन, कबिता 13. सीमित ।



मये-गुलरंग[1] का क़ुसूर नहीं,
तेरे दिल में ही कुछ सुरूर नहीं।

लब सुलगते हैं जिस्म जलता है,
यूँ ही बाहों में रहिये, दूर नहीं।

चौंक उठता हूँ चीख़ पर अपनी,
मुझको जीने का कुछ शुऊर नहीं।

गूँज पाई न लज़्ज़तों की सदा,
ग़म का सन्नाटा बेक़ुसूर नहीं।

मेरी जानिब भी इक निगाहे-करम[2],
कुछ कमी तो तेरे हुज़ूर नहीं।

तेरी क़ाफ़िर अदा भी क़ातिल है,
सर्द मौसम का ही क़ुसूर नहीं।

बाख़ुदा आज भी हैं आप 'कँवल',
आँख से दूर, दिल से दूर नहीं।

---

1. पुष्प रंग की मदिरा 2. कृपा की दृष्टि।

मेरी सदाओं का सूरज बुझा-बुझा सा था,
न जाने हाँफते लम्हों का क्या तक़ाज़ा था।

नज़र में ख़ौफ़ का मंज़र समेट लाया हूँ,
ये और बात कि हर शख़्स ही शनासा था।

अजीब शर्त थी दंगा कराने वालों की,
नगर में रिश्तों का चेहरा उड़ा-उड़ा सा था।

हर एक लम्हा बदलता रहा मेरा चेहरा,
न जाने वक़्त का आईना चाहता क्या था।

ज़मीन प्यासी थी, आँगन के पेड़ प्यासे थे,
'कँवल' के होटों पे सावन का नाम आता था।



ना-कर्दा गुनाहों की सज़ा काट रहे हैं,
हम आज भी इक दरिया के दो पाट रहे हैं।

इन शहर की गलियों में कहाँ गाँव के सावन,
फ़व्वारों के मंज़र मेरा सर चाट रहे हैं।

मौसम के बदलते ही बदल जायेंगे हम तुम,
गो सच है अभी रंजो-ख़ुशी बाँट रहे हैं।

अब तक न मिली नौकरी कोई भी 'कँवल' को ,
हाथों की लकीरों के अजब ठाट रहे हैं।

काविशों[1] का क़ाफ़िला[2] उनकी नवाजिश[3] पर रुका,
काले सायों का सफ़र जिस्मों की ताबिश[4] पर रुका।

मछलियों की टोलियों पर नाचती थी चाँदनी,
रक्से-दिलकश[5] ये किसी पत्थर की नालिश पर रुका।

वस्ल की रानाईयों[6] में बामो-दर[7] गुम हो गये,
तल्ख़ियों[8] का कारवाँ दारे-नवाजिश[9] पर रुका।

फ़ेल थी बिजली तिलस्मे-खौफ़[10] था हर मोड़ पर,
चक्र वहशत का अगरचे कोहे-काविश[11] पर रुका।

यूँ तो उसकी भी तमन्ना थी मुझे मिल जाये पर,
यार मेरा घर में कल घनघोर बारिश पर रुका।

साँझ की दुल्हन ने पीला कर दिया सूरज का मुँह,
धूप का लंबा सफ़र दुल्हन की साजिश पर रुका।

बेशिकन था रात भर बिस्तर तसव्वुर[12] का 'कँवल',
ज़हन का गीला बदन फूलों की रामिश[13] पर रुका।

---

1. प्रयास, परिश्रम 2. मुसाफ़िरों की टोली 3. मेहरबानी 4. ताप, आँच 5. मनोरम नृत्य 6. मिलन-सौन्दर्य 7. द्वार और छत 8. कड़वाहट 9. मेहरबानी की सूली 10. भय का इन्द्रजाल 11. परिश्रम का पहाड़, अथक प्रयत्न 12. कल्पना 13. खुशी।



रोज़ डूबे हुये सूरज को उगा देती है,
रात किस किस को अँधेरे मे सदा देती है।

वक़्त की धूप मुझे कैसी सज़ा देती है,
आग हर ख़्वाब के जंगल में लगा देती है।

आबशारों[1] से उभरती हुई शादाब[2] सदा[3],
दिल मे ग़ालीचा-ए-ख़्वाहिश[4] को बिछा देती है।

तल्ख़[5] साँसों के सफ़र की ही सज़ा है काफ़ी,
ज़िंदगी क्यों मुझे अहसासे-ख़ला[6] देती है।

यूँ तो जंगल में सिककती है हवा सदियों से,
ख़ुश्क शाख़ों को मगर रंग हरा देती है।

कड़वे हालात के गिर्दाब[7] से हस्ती मेरी,
लज़्ज़ते-साहिले-तिफ़्ली[8] को सदा[9] देती है।

तुझसे बिछुड़े हुये अरसा हुआ पर जाने-'कँवल',
तेरी सौग़ात मुझे अब भी रुला देती है।

---

1. जल प्रपात 2. हरा भरा, 3. ध्वनि, आवाज 4. अभिलाषा-आकांक्षा की कालीन 5. कड़वा कटु 6. रिक्तता की अनुभूति 7. भंवर 8. बचपन का आनन्द 9. ध्वनि, आवाज।

सहमी सहमी हुई तस्वीर लिये बैठे हैं,
आइने ख़ौफ़ की जागीर लिये बैठे हैं।

हसरते-ज़ुल्फ़े-गिरहगीर लिये बैठे हैं,
नुक़रई[1] यादों की ज़ंजीर लिये बैठे हैं।

गर्दिशों का है मुक़द्दर पे कड़ा पहरा मगर,
हर क़दम पर नई तदबीर[2] लिये बैठे हैं।

अपने हर ख़्वाब की ताबीर[3] ख़लिश है लोगो,
अपने हर ख़्वाब की ताबीर लिये बैठे हैं।

तुम वहाँ बैठे हो क्यों मिलने का वादा करके,
हम यहाँ ख़ुशियों की तनवीर[4] लिये बैठे हैं।



अब भी आती है हर इक ख़त से वफ़ा की ख़ुश्बू,
हम तेरी शोख़ी-ए-तहरीर[5] लिये बैठे हैं।

हमने भी रक्खा है इक ताजमहल कमरे में,
हम भी एक जज़्ब-ए-तामीर[6] लिये बैठे हैं।

वस्ले-महबूब[7] की बात उट्ठी तो याद आया 'कँवल',
हम तो फूटी हुई तक़दीर लिये बैठे हैं।

---

1. चाँदी सदृश 2. प्रयत्न 3. स्वप्न फल 4. रौशनी, चमक 5. लिखावट की चपलता, मादकता 6. सृजन भाव 7. प्रियतम से मिलन।

तुझे मैं ख़्वाबों का अलबम दिखा नहीं पाया,
कि हर वरक़[1] में झलकती थी खौफ़ की काया।

कभी तो आ के तू यादों की डायरी पढ़ ले,
बिछड़ के तुझ से न अब तक मुझे क़रार आया।

यूँ तैरते रहे फैले ग़मों के सन्नाटे,
कि लज़्ज़तों की सदाओं को बेअसर पाया।

निगल गये हमें कुछ ऐसे, साअतों[2] के भँवर,
कि मैं ही उभरा, न तू ही कभी नज़र आया।

हसीं छलावा था यौवन की धूप क़ुर्ब[3] का लम्स[4],
ढला जो उम्र का सूरज तो उसको होश आया।

नये लिबास पहन कर ये बे-लिबास शजर[5],
बहुत ही ख़ुश हैं कि गुज़रा हुआ शबाब आया।

तुम्हारे होटों पे अमृत के थे कलश लेकिन,
वो मैं ही था जो ज़माने से डर के भाग आया।

1. पन्ना पृष्ठ 2. क्षणों 3. निकटता 4. स्पर्श 5. वृक्ष ।



तन की ख़्वाहिश मन की लगन को सू-ए-हवस[1] ले जायेगी,
किस को ख़बर थी तेरी जुदाई ये दिन भी दिखलायेगी।

जनम-जनम के साथ का वादा पलक झपकते टूट गया,
अब कोई अनजानी गोरी जीवन में रम जायेगी।

राधा जिसकी विरह में जीवन भर सुलगी, उस प्रेमी को,
क्या मालूम था ये दुनिया इक दिन अवतार बनायेगी।

हम बेहद मश्कूर[2] हैं उसके जो बख़्शा है क़ुदरत ने,
क्या कीजे उस शय की शिकायत जो न हमें मिल पायेगी।

जाड़े के सूरज की तरह अच्छा लगता है रूप तेरा,
तेरे रूप की धूप भी लेकिन कब तन मन बहलायेगी।

रह न सकी महफ़ूज़[3] जहाँ दो रूहों की पहचान 'कँवल',
वहाँ बदन की धूप ही कब तक ज़ख़्मों को सहलायेगी।

1. वासना की ओर 2. कृतज्ञ 3. सुरक्षित

है बात जब कि जलती फ़ज़ा[1] में कोई चले,
बरसात में तो नाला भी बन कर नदी चले।

औरों को हमने ख़ुँदालबी[2] बाँट दी मगर,
ख़ुद अपनी चश्मे-शौक़[3] में लेकर नमी चले।

इक जाम और पी लें सरे राहे ज़िंदगी[4],
ठहरो ज़रा रफ़ीक़ो[5] कि हम भी अभी चले।

तुम से बिछड़ के मैं न कभी चैन पा सका,
तुम क्यों मुझे भुला के मेरी ज़िंदगी चले।

सूरज की धूप से कभी सूखी नहीं नदी,
फिर क्यों न ग़म में हँसते हुए आदमी चले।

ये बेबसी कि ज़ख़्म दिखाना भी है गुनाह,
अच्छा चलो ये साजिशे-अग़यार[6] भी चले।

बिखरी हुई हयात[7] समेटूँगा मैं 'कँवल',
शायद इसी से कारगहे-ज़िंदगी चले।

1. वातावरण 2. होटों की हंसी 3. प्रेम नयन 4. जीवन की राह में 5. मित्रों 6. शत्रुओं का षड़यंत्र 7. जीवन ।



मुश्किलों की आँच में तपकर पयम्बर[1] बन गये,
दर्दो-ग़म नदियों का पी कर हम समुंदर बन गये।

दाग़े-लाला[2] की तरह थे जब तलक सिमटे रहे,
जब बिखर कर फैले हम बू-ए-गुले तर[3] बन गये।

यूँ तो लिपटे हैं ग़मों के नाग हमसे दुख भरे,
हम मगर ख़ुश हैं कि चंदन का मुक़द्दर[4] बन गये।

आँख से ओझल हुये तो बिक गये जन्मों के मीत,
प्यार के वादे थे जितने मोम के घर बन गये।

मुझको तो बेचैन कर डाला समुंदर की तरह,
ख़ुद मगर मजबूरिए-साहिल का मंज़र[5] बन गये।

किस तरह होता फ़ना[6] आख़िर वजूदे-कहकशाँ[7],
टूट कर बिखरे भी हम तो माहो-अख़्तर[8] बन गये।

सारी नज़रों का 'कँवल' मरक़ज[9] था अमृत का कलश,
हम घड़ा विष का निगल कर भोले शंकर बन गये।

1. ईश्वरावतार 2. फूल का धब्बा 3. निरंतर सुगंध 4. भाग्य 5. दृश्य 6. विनाश 7. आकाश गंगा का अस्तित्व 8. चांद सितारा 9. केन्द्र ।

उभरेगा कभी जो है अभी डूबता चेहरा,
कंकर न इसे मारो कि है फूल-सा चेहरा।

तनवीर[1] मिली हर्फ़े-सियह[2] से भी जहाँ को,
कोरा था जो काग़ज़ वो है अब वेद का चेहरा।

कुछ धूल भी दरपन पे है लम्हों के सफ़र की,
कुछ ग़म की तपिश से भी हुआ साँवला चेहरा।

मैं पेड़ हूँ, दम लेते हैं सब छाँव में मेरी,
झुलसे है मगर धूप में तन्हा मेरा चेहरा।

अहसास के आँगन में कोई फूल खिला है,
आता है बहुत याद 'कँवल' यार का चेहरा।

1 रौशनी, ज्ञान 2. काले अक्षर ।



टूटे हुये तारे का मुक़द्दर हूँ सद[1] अफ़सोस[2],
पतझड़ के किसी पेड़ का मंज़र हूँ सद अफ़सोस,

तिनके का सहारा भी न था चाह के फिर भी,
मैं डूब न पाया कि शनावर[3] हूँ सद अफ़सोस।

मुमकिन नहीं छूना मैं सँवारूँ इन्हें कैसे,
आईनों के इक ढेर पे आज़र[4] हूँ सद अफ़सोस।

काम आके मेरे हो गये बेकार सभी गुल,
मैं जैसे किसी देवी का मंदिर हूँ सद अफ़सोस।

पैमाने में भी झील सी आँखें उभर आईं,
सच है कि तमन्नाओं का महशर[5] हूँ सद अफ़सोस।

तुम प्रीत की राहों में रहे शबनमी चादर,
मैं आज भी इक मील का पत्थर हूँ सद अफ़सोस।

गंगा नहीं आती है 'कँवल' मिलने को मुझसे,
तन्हाई का बेचैन समुंदर हूँ सद अफ़सोस।

1. सौ 2. पश्चाताप 3. तैराक 4. एक मूर्ति तराश का नाम 5. प्रलय स्थल

पत्थरों को आईना दिखला रहा है कोई शख़्स,
अक्स अपना देख कर घबरा रहा है कोई शख़्स।

सर पे है सूरज, हवायें गर्म हैं, राहें ख़मोश,
जल रहा है और चलता जा रहा है कोई शख़्स।

बन सँवर कर मुंतज़िर[1] हैं मन्दिरों में देवियाँ,
सुब्ह की किरनें बिखेरे आ रहा है कोई शख़्स।

ख़ुश्क लब काँटो का उसको आ गया शायद ख़याल,
आबला पा[2] सू-ए सहरा जा रहा है कोई शख़्स।

ख़्वाहिशों की चिलचिलाती धूप में प्यासा हूँ मैं,
जामे-वस्ले-यार कब से पा रहा है कोई शख़्स।

दो हरे शादाब पत्तों का सिमट कर टूटना,
भींच कर मुझको सुनाये जा रहा है कोई शख़्स।

तुम मिलन की रात का मंज़र न खैंचों ऐ 'कँवल',
शर्म से ख़ुद में सिमटता जा रहा है कोई शख़्स।

1. प्रतीक्षारत, आशन्वित 2. पाँव का छाला



जब भी मैं उससे मिलने की लेकर दुआ गया,
वह मेरा मुंतज़िर[1] था लबे-बाम आ गया।

जब तक था आसमान पे रहबर[2] की तरह था,
टूटा तो फिर ख़ला[3] में बिखरता चला गया।

बेज़ार[4] क्यों न हो कोई दुनिया के दर्द से,
क्या कोई ग़म के दश्त[5] में ख़ुशियाँ खिला गया।

दामन तेरे ख़याल ने छोड़ा न एक पल,
घबरा के ज़िंदगी से मैं दामन छुड़ा गया।

ग़ुँचा दहन तो और भी शादाब[6] हो गये,
तुझको रुला के कौन हसीं गुल खिला गया।

सूरत तेरी अज़ीज़[7] थी जाड़े की धूप सी,
सूरज था तू भी जल्द ही पच्छम दिशा गया।

पिछले पहर किसी की वो आवाजे-पा[8] 'कँवल',
मंदिर में दिल के कौन ये हलचल मचा गया।

1. प्रतीक्षारत, आशान्वित 2. मार्ग दर्शक 3. रिक्त स्थान, अंतरिक्ष 4. विकल-दुखी 5. अरण्य-वन 6. हरा-भरा 7. प्रिय स्वजन, 8. पदचाप।

जामो-सुबू[1] यूँ ही नहीं ठुकराये हुये हैं,
उन मस्त निगाहों के पयाम[2] आये हुए हैं।

लब लाल बदख़्शाँ[3] हैं तो आँखे हैं ग़िज़ाली[4],
यौवन के कलश नाज़ से छलकाये हुये हैं।

संदल[5] सा बदन सुब्ह की किरनें है बिखेरे,
ज़ुल्फ़ों में शबे-मस्त[6] को उलझाये हुये हैं।

यादों ने तेरी मुझको दिया इज़्ने-तबस्सुम[7],
जज़्बात[8] मेरी आँखों को छलकाये हुये हैं।

हम अपनी तबाही का गिला कर नहीं सकते,
अंदेशों की बारात से घबराये हुये हैं।



अब आस है तेरी, न तेरा ग़म न तमन्ना,
दो फूल हैं नर्गिस[9] के जो कुम्हलाये हुये हैं।

मायूस नहीं तेरे करम से ये गुनहगार,
दामन तेरे आगे ही तो फैलाये हुये हैं।

मै सुब्ह का सूरज हूँ मेरा फ़र्दा[10] है रौशन,
ये अब्रे-सियह[11] मुझ पे अबस[12] छाये हुये हैं।

आशिक़ हूँ 'कँवल' आम है चर्चा मेरा जग में,
क्यों देख के आईना वो शरमाये हुये हैं।

1. प्याला और शराब 2. संदेश 3. शोणित-लोहित 4. मृगशावक 5. चंदन 6. मतवाली रात 7. मुस्कुराने का आदेश 8. भावना 9. नयन जैसा एक फूल 10. आगामी काल-भविष्य 11. काले बादल 12. व्यर्थ-निरर्थक।

पहुँच इक मुश्ते-ख़ाकी[1] की सितारों के जहाँ तक है,
जुनूने-शौक़[2] की शोहरत[3] ज़मीं से आस्माँ तक है।

बना डाला मुहब्बत ने उन्हें रश्के-महो-अख़्तर,
जहाँ हैराँ है, इक ज़र्रे[4] का शोहरा[5] कहकशाँ[6] तक है।

भटकती फिर रही है बाग़ में बेआबरू होकर,
फ़साना[7] बर्क़[8] का शायद मेरे ही आशियाँ[9] तक है।

फ़िराक़े-यार में रह रह के यूँ दिल पे गुज़रता है,
मज़ा जीने का दुनिया में बहारे-दोस्ताँ[10] तक है।

फ़क़त उड़ती हुई ख़ुश्बू थी वस्ले-यार की ख़ुशियाँ,
मगर इक शख़्स के ग़म की रसाई जिस्मो-जाँ तक है।

कोई गुज़रा है यूँ ख़ुश्बू लुटाता सहने-गुलशन[11] से,
कि खोया सा तसव्वुर[12] में 'कँवल' दौरे-ख़िज़ाँ तक है।

---

1. मुट्ठी भर जमीन 2. प्रेमोन्माद 3. ख्याति, प्रसिद्धि 4. कण 5. ख्याति यश 6. आकाश गंगा 7. कथा-कहानी 8. बिजली 9. घर, घोसला 10. प्रिय के संग की खुशी 11. उपवन के निकट से 12. कल्पना



काबे से निकल के भी हैं इक काबे के अंदर,
सीने से लगाये हैं हमें काशी के मंदर।

ऐ बुतशिकनो! महवे-तवाफ़[1] आज हो क्यों कर,
जब संग[2] था इक रोज़ वो हँसता फ़ने-आज़र[3]।

आमादा-ए-हक़गोई[4] न कर दे ये तग़ाफ़ुल[5],
ऐसा न हो बन जायें तेरी राह का पत्थर।

बरसो जो बियाबाँ[6] पे तो हो ज़िक्रे-इनायत[7],
मोहताजे-करम[8] तो नहीं लहराते समन्दर।

आ जा भी कि बरसात के अब आख़िरी दिन हैं,
आँखों में लरज़ते हैं तेरे वस्ल[9] के मंज़र[10]।

करते हैं 'कँवल' जो तेरी मिदहत[11] तेरे मुँह पर,
वो लोग चुभोते हैं तेरी पीठ में ख़ंजर।

---

1. परिक्रमा में मग्न 2. पत्थर 3. एक मूर्ति तराश का नाम 4. सत्य कहने का तत्पर 5. उपेक्षा 6. रेगिस्तान 7. अनुग्रह की चर्चा 8. कृपा पात्र 9. मिलन-संयोग 10. दृश्य 11. प्रशंसा ।

जब भी मिलता है कोई शख़्स अकेला मुझको,
ज़र्रा-ज़र्रा[1] नज़र आता है सुनहरा मुझको।

तुम उजालों में न दे पाये कभी साथ मेरा,
रास आया न कभी आह अँधेरा मुझको।

फ़ुर्कते-यार[2] में आया है वो सैलाबे-हवस[3],
आईना-आईना हैरत से है तकता मुझको।

संग बख़्शी है जिसे शक्ले-हसीं[4] आज़र[5] ने,
बुत परस्ती[6] का सबक़[7] हँस के है देता मुझको।

हैफ़ सद हैफ़[8] जो ख़ुशियों का समुंदर था कभी,
आज वह शख़्स लगा दर्द का सहरा मुझको।

हो न हो प्यार के जज़्बे का असर हो ये 'कँवल',
आज वह बुत नज़र आता है ख़ुदा सा मुझको।

1. कण-कण 2. सखा का वियोग 3. तृष्णा-लिप्सा-लोभ का बाढ़ 4. सुन्दर मुखड़ा 5. संगतराश 6. मूर्ति पूजा 7. शिक्षा 8. पश्चाताप।



जब जुल्फ़ तेरी मुझ पे बिखरती नज़र आये,
बिगड़ी हुई तक़दीर सँवरती नज़र आये।

हौले से सबा[1] जब भी गुज़रती नज़र आये,
तस्वीर तेरी दिल में उतरती नज़र आये।

ये मंज़िले-उल्फ़त[2] तो नहीं अहदे-गुज़िश्ता[3],
इक याद थी दिल में जो बिसरती नज़र आये।

होटों की हँसी ताज़गी-ए-ज़ख़्म है यारो,
दिल में ये छुरी बन के उतरती नज़र आये।

मलबूसे-मसीहा[4] में छुपे बैठे हैं क़ातिल,
अब ज़ीस्त[5] न क्यों इनसे भी डरती नज़र आये।

बख़्शी है 'कँवल' मैंने ग़मे-ज़ीस्त को शोहरत,
मै हूँ कि हँसी लब पे सँवरती नज़र आये।

1.प्रभात समीर 2. अनुराग का गंतव्य 3. गुजरा हुआ काल 4. मसीहा के भेश में 5. जीवन ।

ग़म तेरा मुझे अपनों का अहसास दिलाये,
मैं आज भी तुझ से हूँ बहुत आस लगाये।

जब बात चली मेरे हसीं जुर्मे-वफ़ा की,
इक क़ातिले-मासूम[1] था सर अपना झुकाये।

सुनकर किसी बरबादे-मुहब्बत की कहानी,
सब हँस पड़े लेकिन मेरे आँसू निकल आये।

आवाज़ तो दी है तुझे बेसाख़्ता लेकिन,
गुज़रे हुये लम्हे की तरह तुम नहीं आये।

ख़ुर्शीदे-ग़मे-दहर[2] की जब तेज हुई धूप,
याद आये तेरी चश्मे-करम[3] के घने साये।

इक जज़्ब-ए- पुरकैफ़े-मुहब्बत की बिना[4] पर,
इक अजनबी चेहरे को हूँ महबूब बनाये।

अब आस है तेरी, न तेरा ग़म, न तमन्ना,
तू ने भी अजब दिन मेरे महबूब दिखाये।

इक साकी-ए-महवश[5] है तसव्वुर[6] में 'कँवल' के,
सावन का महीना है जवाँ अब्र[7] हैं छाये।

---

1. सरल स्वभाव का हत्यारा 2. सांसरिक कष्ट का सूर्य 3. कृपा दृष्टि 4. आधार 5. चांद जैसा सुन्दर 6. कल्पना 7. बादल ।



हर आदमी दुख दर्द में ग़लताँ[1] नज़र आया,
इन्सान से ग़ाफ़िल[2] मुझे यज़्दाँ[3] नज़र आया।

ऐ दौरे-तरक़्क़ी[4] तेरी सौग़ात[5] अजब है,
जिस चेहरे को देखा वो परेशाँ नज़र आया।

उलझी रही शोलों से हर इक शाख़े-नशेमन,
गुलशन में अजब जश्ने-चिराग़ाँ[6] नज़र आया।

तुम साथ थे जब तक ये ख़ुदाई थी मेरे साथ,
तुम बदले तो बदला हुआ दौराँ नज़र आया।

रुस्वा सही, बर्बाद सही, फ़ख़्[7] है मुझको,
मैं इश्क़ के अफ़्साने[8] का उन्वाँ[9] नज़र आया।

क्यों रास वफ़ा तुझको न आई मेरे महबूब,
क्यों तू मेरी उल्फ़त से गुरेज़ाँ[10] नज़र आया।

लाई है हविस मुझको 'कँवल' मोड़ पे ऐसे,
मैं अपनी मुहब्बत से पशेमाँ[11] नज़र आया।

---

1. परेशान 2. बेपरवाह, विमुख 3. ईश्वर 4. उन्नति, प्रगति का युग 5. उपहार 6. दीपोत्सव 7. गर्व 8. कथा 9. शीर्षक 10. पृथक-विमुख 11. लज्जित।

मैं शहर में पत्थर के हूँ इक पैकरे-जज़्बात,[1]
ऐ काश! मिले कोई जो समझे मेरे हालात।

रुत मस्त है, भीगी है हवा, चाँदनी है रात,
आ जाओ तुम ऐसे में लिये प्यार की सौग़ात।

सहमी हुई साँसों की थकन, मौत की घातें,
किस मोड़ पे ले आई है अरमानों की बारात।

भटके हैं बहुत अहले-ख़िरद[2] गलियों में तेरी,
इस तरह न हँस, दे के जुनूँ[3] की हमें सौग़ात।

घबराओ न ऐ गर्दिशे-अय्याम[4] के मारो,
अब ग़म के फ़साने में हैं दो चार ही सफ़हात[5]।

खोया हुआ हर शख़्स है दुख-दर्द में अपने,
आ जाये कोई काश लिये ख़ुशियों की बारात।

ये तल्ख़ी-ए-हालात सताती है 'कँवल' जब,
याद आते हैं माज़ी[6] के महकते हुये लम्हात[7]।

---

1. भावनाओं का शरीर, 2. बुद्धिजीवी 3. उन्माद 4. समय का चक्र 5. पृष्ठ-पन्ना 6. भूतकाल 7. पल, क्षण।



पैरों में मेरे .फ़र्ज की ज़ंजीर पड़ी है,
ए जज़्ब-ए-दिल[1] ठहर बहुत सख़्त घड़ी है।

अब जन्मों के रिश्ते भी कहीं टूट न जायें,
यूँ अपनी वफ़ा फ़र्ज़ से इस बार लड़ी है।

जुल्फ़ों की घटा, आँख के ख़ुम[2], प्यार का बादा[3],
आग़ोश[4] में आ जाओ लिये रात बड़ी है।

तदबीर[5] से जाग उठती है सोई हुई तक़दीर,
तदबीर मुक़द्दर की वो ख़ामोश कड़ी है।

इक पल की ख़ुशी को हैं तरसते कई युग से,
कहते हैं 'कँवल' उम्रे-ग़मे-यार बड़ी है।

---

1 मन की भावना 2. शराब का मटका 3. मदिरा 4. गोद 5. उपाय, युक्ति।

ख़्वाबों के दरीचों से न अब रूप दिखाओ,
आओ मेरी आग़ोशे[1]-मुहब्बत को सजाओ।

फागुन के महीने में तमन्नाओं के मेले,
फिर ग़मकदा-ए-दिल[2] में लगे हैं चले आओ।

मुस्तक़बिले- ज़र्रीं[3] के ख़दो-ख़ाल[4] सँवारो,
इमरोज़ को माज़ी का न आईना दिखाओ।

मैं कलियों के होटों पे हूँ बिखरी हुई शबनम,
ऐ वक़्त की किरनो, मेरा दामन न जलाओ।

ऐसा न हो मैं बेच दूँ हाथों में हविस के,
आ जाओ सनम अपनी अमानत को बचाओ।



मैं आँखे बिछाये हुये रस्ते में खड़ा हूँ,
ऐ गुलबदनो, मुझसे यूँ कतरा के न जाओ।

हर हँसते हुये फूल के चेहरे पे लिखा है,
देखो मुझे, लेकिन मेरे नज़दीक न आओ।

ज़ख़्मों के चमनज़ार[5] सजे हैं मेरे दिल में,
ऐ देखने वालो मेरी सूरत पे न जाओ।

हर चेहरा है इक काग़ज़ी गुलदान की सूरत,
बेहतर है 'कँवल' तुम न इसे हाथ लगाओ।

---

1. गोद 2. दुख भरे दिल का घर 3. सुनहरा भविष्य 4. नाक-नक़्श 5. वाटिका

वो रुख़े–शादाब है और कुछ नहीं,
ये दिले–बेताब है और कुछ नहीं।

गौहरे–नायाब[1] है और कुछ नहीं,
ज़िंदगी इक ख़्वाब है और कुछ नहीं।

हर वरक़[2] में क़ैद हैं रानाईयाँ[3],
मुज़्तरिब[4] इक बाब[5] है और कुछ नहीं।

मछलियों पर खिलखिलाती चाँदनी,
हमनवां[6] तालाब है और कुछ नहीं।

जिस्म की हर शाख़ पर अठखेलियाँ,
जुर्रते–महताब[7] है और कुछ नहीं।



महफ़िले–रुखसारो–लब[8] में दिलरुबा,
बस मेरा आदाब है और कुछ नहीं।

शबनमी चादर लपेटे मौज में,
इक गुले–शादाब[9] है और कुछ नहीं।

तेरे मिलने का हसीं, मंज़र 'कँवल',
सुब्ह का इक ख़्वाब है और कुछ नहीं।

---

1. दुर्लभ मोती 2. पन्ना–पृष्ट 3. सुन्दरता 4. बेचैन, व्याकुल 5. अध्याय 6. सहमत
7. चन्द्रमा की धृष्टता 8. गालों और होंटों की सभा 9. प्रफुल्लित पुष्प।

आज भी मेरा दामन ख़ाली, आज भी दिल वीरान,
वक्त सजाये आज भी बैठा है रंगीन दुकान।

फ़ौजी बूटों से घायल गाँव की पगडंडी पर,
एक कुँवारी ढूँढ रही है दो पैरों के निशान।

जाम के बदले मयख़ाने में चलती हैं तलवारें,
साक़ी दूर खड़ा है गुमसुम और ख़ुदा हैरान।

कैसा है ये दौरे-तरक्क़ी क्या इसकी सौग़ात,
हथियारों की क़ीमत ऊँची सस्ता है इन्सान।

जाने किसकी आस में खोये हैं गोरी के नैन,
गली ख़मोश, उदास मुँडेरें आँगन है सुनसान।

सारी ख़ुदाई प्रीत की दुश्मन है मेरे महबूब,
रूठ गये जो तुम भी मुझसे रह न सकेंगे प्रान।

आवारा सा भटक रहा हूँ गलियों में मैं आज 'कँवल',
अहले-नज़र[1] महवे-हैरत[2] हैं कौन है ये इन्सान।

---

1. पारखी लोग 2. चकित-विस्मित



सर्द है रात, सुलगती हुई तन्हाई है,
दिल के आग़ोश में इक चोट उभर आई है।

मेरे महबूब कहाँ है तू सदा ही दे दे,
ज़िंदगी फिर मेरे माज़ी को पुकार आई है।

महो-अंजुम[1] की जवानी भी ढली जाती है,
आख़िरी लौ तेरी उम्मीद की उकसाई है।

जुस्तजू[2] मेरी ज़मीं पर न करो अहले-ज़मीं[3],
ज़िंदगी मेरी ख़लाओं के क़रीब आई है।

ज़ख़्म के फूल महक उठ्ठे हैं, साग़र खनके,
साक़िया! जाम, चली यादों की पुरवाई है।

जब भी छाई है मेरे सर पे मुसीबत की घटा,
आशना चेहरों ने यकगोना[4] ज़िया पाई है।

ज़ुल्फ़-बरदोश[5] है साक़ी भी है घटायें भी हैं,
रक़्से-मय तेज़ करो जश्न की रात आई है।

गर्द राहों की मेरे पाँव ने चाटी है 'कँवल',
तब कहीं मंज़िले-मक़्सूद[6] नज़र आई है।

1. चाँद और सितारों 2. अन्वेषण, खोज 3. पृथ्वी निवासियो 4. एक रंग-एक प्रकार 5. काँधे पर अलक 6. अभीष्ट स्थान ।



जुर्म है इश्क़ तो हाँ इसका ख़तावार हूँ मैं,
जुर्रते-दिल[1] न पशेमाँ[2] हो कि ख़ुद्दार[3] हूँ मैं।

कोई तस्वीर नहीं, कोई तसव्वुर भी नहीं,
दरे-एहसास[4] पे लम्हाते-गिराँबार[5] हूँ मैं।

ज़ख़्म ही ज़ख़्म मुझे गर्दिशे-दौराँ[6] ने दिये,
एक मुद्दत से मसर्रत[7] का तलबगार[8] हूँ मैं।

दिल के कशकोल[9] में जुज़[10] अश्के-अलम[11] कुछ भी नहीं,
फिर भी दुनिया ये समझती है कि ज़रदार[12] हूँ मैं।

दस्ते-साकी[13] से कभी जाम लिया था बढ़कर,
जुर्म में इसके शहीदे-रसनो-दार[14] हूँ मैं।

हूरो-गि़ल्माँ[15] से न वाकिफ़[16] न ही अफ़्लाकनशीं[17],
नौए-इन्साँ[18] की परस्तिश[19] का गुनहगार हूँ मैं।

सख़्त पहरा है रिवाजों का मसर्रत[20] पे 'कँवल',
रविशे-दहर[21] से इस वास्ते बेज़ार[22] हूँ मैं।

---

1. दिल का साहस 2. लज्जित 3. स्वाभिमानी 4. चेतना का द्वार 5. बोझिल पल 6. समय का चक्र 7. हर्ष 8. याचक 9. भिक्षा पात्र 10. सिवा 11. वेदना का आंसू 12. धनाढ्य 13. शराब पिलाने वाला हांथ 14. फांसी पर 15. स्वर्ग की अप्सरायें एवं मासूम फ़रिश्ते 16. परिचित 17. आसमान, स्वर्ग में निवास करनेवाला 18. मनुष्य जाति 19. आराधना, पूजा 20. हर्ष 21. जगत की रीति 22. बेपरवाह।



झूमती हर सुबह की ख़ूँ में नहाई शाम है,
फिर भी सर पर सुब्ह के ही क़त्ल का इल्ज़ाम है।

क्या हुआ गलियों में मेरा इश्क़ जो बदनाम है,
दर हक़ीक़त[1] इश्क़ रुस्वाई[2] का ही इक नाम है।

फिर सदा[3] दी है मेरे माज़ी[4] ने मुझको दफ़अतन[5],
फिर मेरी साँसो में बरपा[6] हश्र[7] का कोहराम है।

लहर इक मिटते ही आ जाता है लहरों का हुजूम,
ज़िंदगी शायद किसी तूफ़ाने-ग़म का नाम है।

फिर रहा हूँ दर बदर ज़ख़्मों की चादर ओढ़कर,
ये मेरे माहौल ने बख़्शा मुझे इनआम है।

कितने अश्कों के दिये हम ने जलाये ऐ 'कँवल',
उस हँसी के वास्ते जो आज तक गुमनाम है।

---

1. वास्तव में, 2. बदनामी 3. आवाज, 4. अतीत 5. अकस्मात, 6. उठा हुआ 7. प्रलय ।

हर दम दिल के आँगन में ली ग़म ने ही अँगड़ाई,
भूले से भी गूँज सकी न ख़ुशियों की शहनाई।

रंग रंगीले दुनिया वालों की उफ़ रे नादानी,
बनते हैं सब मन के बदले तन के ही शैदाई।

हुस्न को पूजा, चाहा, सराहा, हर दम इस दुनिया ने,
किस युग में इस इश्क को जग ने सूली नहीं चढ़ाई।

तन के काले बंदे नंगे, फुटपाथों पर सोये,
मन के काले लोगों को गद्दों पर नींद न आई।

ख़ुशियों के हंगामे तो चलते ही थक जाते हैं,
साथ 'कँवल' का देती है ग़म में डूबी तन्हाई।



गर तेरी बंदगी नहीं होती,
ज़िन्दगी ज़िन्दगी नहीं होती।

मौत की जुस्तजू[1] है क्यों तुझको,
मौत में दिलकशी[2] नहीं होती।

बात क्या है कि आजकल मुझको,
तुझसे मिलकर ख़ुशी नहीं होती।

हाय बेचारगी-ओ-मजबूरी,
जो करूँ बंदगी, नहीं होती।

कितना दुश्वार है ये फ़न यारो,
शायरी दिल्लगी नहीं होती।

अब 'कँवल' को न छेड़ियेगा कभी,
उसके लब पर हँसी नहीं होती।

---

1. तलाश, 2. आर्कषण ।

तुम ही कहो बढ़ जाती है क्यों बरसातों में दिल की जलन,
ठंडी फुहारों से लगती है, तन मन में क्यों और अगन।

तुम क्या जानो बरसे हैं जब आवारा बादल 'सावन',
बढ़ जाती है कितनी तुम से मिलने की तड़पन तरसन।

भीग रही है कोई कुँवारी छत पर इन बौछारों में,
कोई दिवाना प्रीतम के दर्शन में है यूँ आज मगन।

आह मचलने लगते हैं अरमान दिले-आवारा में,
आता है जब याद तेरा भीगा-भीगा शफ़्फ़ाफ़ बदन।

तुम हो कहाँ महबूब मेरे सावन की नशीली रातों में,
देख 'कँवल' बेबस हो कर ढूढे हैं तुम्हें दरपन दरपन।



उमीदों की बस्ती सजी, तुम न आये,
निगाहें रहीं ढूढती तुम न आये।

लिये साग़रो-मीना बैठे रहे हम,
घटाओं में थी बरहमी[1] तुम न आये।

जवाँ हुस्न वालों के मेले लगे थे,
तुम्हारी ही थी बस कमी, तुम न आये।

जुदा कर न पाती कभी हमको दुनिया,
मगर हाँ तुम्हारी ख़ुशी, तुम न आये।

तुम आओगे इक दिन लिये साजे-इश्रत[2],
ये मौहूम[3] उम्मीद थी, तुम न आये।

हर इक गाम[4] पर हँस रहे थे उजाले,
मेरे दिल में थी तीरगी[5] तुम न आये।

वफ़ा से 'कँवल इक ज़माना था बरहम[6],
मगर आह क्या बात थी तुम न आये।

---

1. रंजिश, अप्रसन्नता 2. सुख का सामान 3. भ्रम-मूलक 4. क़दम 5. अंधकार 6. कुपित-क्रुध

दिल की दुनिया हो गई ज़ेरो-ज़बर[1],
जब भी याद आया तेरा तर्ज़े-सफ़र[2]।

वो सलामे-शौक़ [3] वो अफ़सुर्दगी[4],
वक़्ते-रुख़सत[5] वो तेरी नीची नज़र।

ख़ारे-तिश्नालब[6] की आँखों में चमक,
आबला-पा मुझको बढ़ता देखकर।

इश्क ही के दम से दोनों की बहार,
दश्ते-वहशत[7] हो कि हो मजनूँ का घर।

इश्क़ की तक़दीर में कुछ भी नहीं,
शम्अ को जलना है लेकिन ता-सहर[8]।



इख़्तियार[9] अपनी ही हस्ती[10] पर नहीं,
आ गई है ज़िंदगी किस मोड़ पर।

जब ढले इफ़लास[11] के साँचे में हम,
फिर गई हमसे ज़माने की नज़र।

फूल बरसाये थे मैंने जिस जगह,
है उसी वादी में ज़ख़्मी मेरा सर।

हूँ 'कँवल' मैं फूल इक मसला हुआ ,
बाँटता हूँ दहर[12] को ख़ुश्बू मगर।

---

1. अस्त-व्यस्त 2. यात्रा की शैली 3. आदर भरा प्रणाम 4. खिन्नता, उदासीनता 5. विदा के समय 6. पिपासित कांटे 7. पांव के छालों सहित त्रास का वन 8. प्रात: काल तक 9. नियंत्रण 10. अस्तित्व 11.निर्धनता 12. दुनिया ।

बाँहो में समुन्दर के दरिया का सिमट जाना,
और देख के ये मँज़र तेरा वो क़रीब आना।

ले ले के तेरा नाम अब कसते हैं सभी ताना,
तुझ बिन मेरे जीवन का सूना है सनम ख़ाना[1]।

घायल है हर इक नग़्मा तुम रूठ गये जब से,
तुम से हैं मेरी ख़ुशियाँ क्यों तुमने नहीं जाना।

इमरोज़ के मंज़र पर सद नक़्श हैं माज़ी के,
माज़ी से है कैफ़आगीं इमरोज़ का मयख़ाना[2]।

माँ बाप की ख़ुशियाँ थीं राहों में 'कँवल' अपनी,
वरना हमें आता था संसार से टकराना।

1 मंदिर 2. मदिरालय ।



सामने तुम हो, सामने हम हैं, बीच में शीशे की दीवार,
रंगे-वफ़ा झलके आँखों में, लेकिन हो कैसे इज़हार।

गूँगा सा मैं, तुम भी चुप चुप, दिल में है तूफ़ान बपा,
कोई ये ख़ामोशी तोड़े, चुप हो जायेगा संसार।

दम लेने को छाँव में उल्फ़त की जब इक पल ठहर गया,
छोड़ चले सब साथी मेरे, उनको जह़र लगा ये प्यार,।

हुस्न की माँग में चाँद सितारे रक्सकुनाँ[1] हैं शामो-सहर[2],
लेकिन मेरा इश्क़ अभी तक पहने है काँटो का हार।

सावन के बादल भी अपना रूप दिखाकर जाते हैं,
रक्सकुनाँ शोलों के संग में झूमती है जब कभी बयार।

ज़ेरे-फ़लक[3] रह कर भी अपनी आँख लगी थी सू-ए फ़लक[4],
आख़िरकार महो-अख़्तर[5] से हम भी पत्थर हो गये यार।

मेरी जब बारी आई तो रूठ गया मुझसे अल्लाह,
आह! 'कँवल' ने तो माँगा था तुमसे बस सावन का प्यार।

1. नृत्यशील 2. सुबह शाम 3. आकाश के नीचे 4. आकाश की ओर 5. चांद सितारा।

क्या कशिश थी तेरे बहाने में,
लुत्फ़ आया फ़रेब खाने में।

आतिशे-ग़म[1] न मिल सकी वरना,
क्या था ख़ूने-जिगर[2] जलाने में।

जुस्तजू में तेरी हुआ हूँ गुम,
ये मिला मुझको दिल लगाने में।

चार तिनकों का हश्र क्या कहिये,
लग गई आग आशियाने में।

तेरे ग़म का भी बोझ ढो लेता,
हाय मजबूर हूँ ज़माने में।

वो पशेमाँ से हो गये सुनकर,
बात क्या थी मेरे फ़साने में।

तुम 'कँवल' को सता लो जी भर के,
ये तो यकता[3] है ग़म उठाने में।

1. दुख की आग 2. यकृत की रक्त 3. अद्वितीय ।



हुस्न है दिलकश तबाही इश्क़ को मंज़ूर है,
फिर भी जाने क्यों मुहब्बत आज तक मजबूर है।

ये रूदादे-हुस्ने-माहो-अंजुमे-अफ़्लाक़[1] उ.फ,
ज़मीं पे कुछ नहीं क्या, अर्श[2] से ही नूर है।

मुफ़्लिसों[3] की रोटियाँ, अम्नो-अमाँ[4] जीने का हक़,
छीनने वालों से मुझको दुश्मनी मंजूर है।

ये हयाते-मुख़्तसर,[5] लंबी ये फ़न[6] की सरहदें,
चल रहा हूँ फिर भी गो[7] मंज़िल बहुत ही दूर है।

दीद की हसरत है पर वो सामने आते नहीं,
एक मुद्दत से 'कँवल' दीदार से महजूर[8]है।

1. आकाश के चांद सितारों के सौंदर्य की कहानी 2. आसमान 3. निर्धन
4. शांति-सुरक्षा 5. संक्षिप्त जीवन 6. कला 7. यद्यपि 8. वियोगी ।

अपने अपने कान बंधक रख दो, आँखें फोड़ लो,
वक़्त के बेरहम मौसम से ही नाता जोड़ लो।

अपने होठों पर सजा लो बर्फ़ की गहरी तहें,
देशहित की भावना की धूप से मुँह मोड़ लो।

इन दिनों जब बेचते फिरते हैं सब अपना ज़मीर[1],
तुम भी बेशर्मों के आगे हाथ अपने जोड़ लो।

टहनियों के दर्द से आगाह[2] होना है फ़िज़ूल[3],
अधखिली कलियाँ, दमकते फूल फ़ौरन तोड़ लो।

जिस्म की ख़ुश्बू सुगंधित आत्मायें ले उड़ीं,
उड़ते गिध अब तुम भी ज़िंदा शव से रिश्ता जोड़ लो।

1. अन्तरात्मा 2. अवगत 3. व्यर्थ ।



एक औरत ही आदम की तक़्दीर थी,
या हवस की गुफ़ाओं की जागीर थी।

हर कड़ी का बदन ख़ौफ़ में क़ैद था,
सच को जकड़े हुये एक ज़ंजीर थी।

फ़र्ज़ की सूलियों पे मैं ख़ामोश था,
चार सू गूँजती मेरी तक़रीर थी।

वक़्त ने म्यूजियम में सजाया मुझे,
उसकी दीवारों पर मेरी तहरीर थी।

आईनों के बदन पर दहकती हुई,
पत्थरों की विवशता की तस्वीर थी।

एक 'सारा शिगुफ्ता[1]' थी इक थे 'सईद[2]',
जैसे राँझे की आहों मे इक हीर थी।

क्या मुक़द्दर था परछाईयों का 'कँवल',
कोई दीवारो-दर थे, न तदबीर थी।

1. कराची की एक शायरा 2. सारा के प्रेमी।

हर पल संवरने सजने की फ़ुरसत नहीं रही
आँखों को आइने की ज़रूरत नहीं रही

मिलने पे यूँ बिछुड़ने का अहसास ही न था
बिछुड़े कभी तो मिलने की क़िस्मत नहीं रही

आँखों में एड्स होने का है खौ़फ़ इस तरह
अब बेवफ़ाई की कोई सूरत नहीं रही

हमदर्दी की वो धूम है राहत की राह पर
'कोसी' को कोसने में भी लज़्ज़त नहीं रही

अब मुंतज़िर नहीं हूँ मैं खिड़की से धूप का
अच्छा है मेरे सर पे कोई छत नहीं रही

लुत्फ़े-करम है दौलते-इफ़्लास का यही
महफ़िल में मेरी इज़्ज़तो-शोहरत नहीं रही

उसके बदन की गंध मुझे भा गई 'कँवल'
अब ख़ुशबुओं की मंडी की चाहत नहीं रही



बहुत मज़ा है तेरे मिलन की रातों में,
रातों में, रातों की नशीली बातों में।

ख़ुशबू के लम्हात सफ़र में साथ रहे,
हाथ मेरा था जब तक तेरे हाथों में।

सूरज के सब सपने टूटे शाम तलक,
डूब गया बेक़ाबू दिन फिर रातों में।

ज़ुल्फ़ों में ख़ुशबू है प्यार के मौसम की,
मय का नशा है आँखों, बातों बातों में।

लम्स तुम्हारा शोलों के पैकर में था,
आग लगी भीगी-भीगी बरसातों में।

मैं उससे मिलने को था बेताब 'कँवल',
वह भी था बेचैन बिरह की रातों में।

न जाने  कौन सा पत्थर हो कब मेरे मुक़द्दर में,
बहुत ही ख़ौफ़ में रहता हूँ मैं इस काँच के घर में।

बहुत मसरूफ़  है पर बेख़बर हरगिज़ नहीं है वह,
कोई भी सर उठा कर चल नहीं सकता समुंदर में।

बुझे मन से बुझे दीपक से मायूसी ही फैलेगी,
जलाओ इक दिया तब रौशनी फैलेगी घर घर में।

समुंदर के ग़ुरूरो-रौब को मिस्मार जो कर दे,
बला का हौसला और जोश होता है शनावर में।

तुम्हारी बेवफ़ाई ने मुझे शायर बना डाला,
समुंदर बाँध के लाया हूँ अपने दीदाए-तर में।

अभी  शोहरत की शहज़ादी  करेगी और भी रुसवा
'कँवल' देगी हवस शोहरत की गहरे ज़ख़्म भी सर में



नहीं है दोष कुछ इसमें वफ़ा का,
सरासर जुर्म है इसमें अना का।

बज़ाहिर बेहुनर लगता है वो भी,
उसे डर है बहुत शायद सज़ा का।

ग़ज़ल का शेर, मिसरा और मतला,
बहुत ममनून है उस बेवफ़ा का।

तुम्हीं से माँगने आया हूँ तुमको,
करो तुम ऐतराफ़  इस हौसले का।

जो घर बंदों का जलने से बचाये,
वही बस ख़ास बंदा है ख़ुदा का।

लिपट जाऊँ मैं उससे जा के फ़ौरन,
अगर आदेश हो जाये अना का।

कभी तो पास वह आयेगा मेरे,
कभी देगा सिला मेरी वफ़ा का।

उस हुस्ने बला का कभी चर्चा नहीं करते,
हम राहते दिल को कभी रुसवा नहीं करते।

आराम की दौलत में इज़ाफ़ा नहीं करते,
हम अहले-सियासत हैं ख़सारा नहीं करते ।

जज़्बात को पोशीदा ही रखते हैं दिलों में,
महफ़िल में हम इज़हारे-तमन्ना नहीं करते।

क्या करना है कहिये हमें, ये बात न कहिये,
ऐसा नहीं करते, कभी वैसा नहीं करते।

जीने की तमन्ना लिये जीते हैं, मगर हम,
जीवन में कभी कोई करिश्मा नहीं करते।

हर सुब्ह उजाड़ो न तमन्नाओं के मेले,
उम्मीदों की बस्ती को जलाया नहीं करते।

महफ़िल में बुलाकर नहीं देते हो तवज्जह,
महफ़िल में बुलाकर कभी तन्हा नहीं करते।

क्या करते हैं वे लोग जो कहते हैं 'कँवल' को,
'हम इश्क तो करते है तमन्ना नहीं करते'।



जब उधर से तू मेरे साथ इधर हो जाये,
ख़ूबतर फिर मेरा अंदाज़े-सफ़र हो जाये।

ख़ुश अदा से कभी इक माहजबीं साथ चले,
और ख़ुश रंग सा चाहत का नगर हो जाये।

हौसला जब हो हुकूमत का, इरादा भी हो,
खलबली शोर करे लोगों में डर हो जाये।

कौन कहता है मुहब्बत का असर ख़त्म हुआ,
आप चलिए जो मेरे साथ ख़बर हो जाये।

ढूँढता है वो मुनासिब सा बहाना कोई,
उसकी चाहत है जुदा दोनों का घर हो जाये।

ज़िन्दगी में बडी़ राहत हो मगर शर्त है ये,
बेहुनर लोगों को आदाबे-हुनर हो जाये।

दोनों मुल्कों में मुहब्बत हो, अमन चैन रहे,
ऐ 'कँवल' ऐसा दुआओं में असर हो जाये।

मेरे नसीब में दिन ऐसा बार बार आये,
तुम्हारा साथ हो और मौसमे-बहार आये।

तुम्हारी आँखों से पैग़ाम-बेशुमार आये,
तुम्हारे लम्स को मैं सोचूँ और ख़ुमार आये।

न पूछ क़िस्सा-ए-राहे-वफ़ा तू ऐ मोहसिन,
चढ़ाव आये कई और कई उतार आये।

फँसी है जाम में बस, सोचते हैं ये बच्चे,
निज़ाम होगा जब अपना तो कुछ सुधार आये।

तुम्हीं बताओ मोहब्बत में क्या ज़रूरी है,
मैं क्या करूँ कि तुम्हें मुझ पे एतबार आये।

क़रार मुझको मिले या मैं बेक़रार रहूँ,
'मेरी तरफ़ से किसी दिल पे क्यों गुबार आये'।



हमको सिला मिला है ये उनकी दोस्ती में,
मशगूल हो गए सब अब हम से दुश्मनी में।

जब तक न दिल में उतरे आँखों की सुर्ख़ शबनम,
बेकैफ़ है, मज़ा कुछ आये न शायरी में।

पूरी कथा सुनाओ, गुज़रा है कैसे क्या क्या,
मतलब नहीं निकलता थोड़ी सी बानगी में।

उन मछलियों का जलना, पानी का वह सुलगना,
थी खलबली जब उतरा, वह गुलबदन नदी में।

है मस्त शोख़ लहजा, पुरकैफ़ वह तरन्नुम,
महफ़िल का रफ़्ता रफ़्ता खो जाना ख़ामुशी में।

तुम साथ जब नहीं थे, ख़ुशियाँ बनी थीं दुश्मन,
'ऐसा भी इक ज़माना गुज़रा है ज़िंदगी में'।

मजहब कोई हो, मक्सद ख़िदमत है आदमी की
आओ 'कँवल' तलाशें ईश्वर को आदमी में।

मेरे साथ कुछ दिन रहा है कोई,
मुझे याद आने लगा है कोई।

महक उसके गेसू की आने लगी,
मेरे घर की जानिब चला है कोई।

सलीक़े से बनने सँवरने लगा,
मेरे रुबरु आईना है कोई।

ख़मोशी में हर चीज़ गुम हो गई,
समुन्दर से दरिया मिला है कोई।

हसीं जुस्तजू दिलशिकन आरज़ू,
ये सौग़ाते-दिल दे गया है कोई।

तेरी याद, तेरी तलब, तेरा ग़म,
तेरा शुक्रिया, सिलसिला है कोई।

'कँवल' क्या हुआ आप मदहोश हैं,
निगाहों में क्या छा गया है कोई।



कभी बुलाओ, कभी मेरे घर भी आया करो,
यही है रस्मे-मुहब्बत, इसे निभाया करो।

तुम्हारे जिस्म के अशआर मुझको भाते हैं,
मेरी वफ़ा की ग़ज़ल तुम भी गुनगुनाया करो।

तुम्हारे वस्ले की रातों की लज़्ज़तों की क़सम,
मुझे जुदाई के मंज़र न अब दिखाया करो।

क़रीब आओ, इन आँखों की जुस्तजू देखो,
हयात बन के मेरे साथ जगमगाया करो।

बहुत अँधेरा है बिजली भी फ़ेल है दिल की,
मुहब्बतों का दिया ले के छत पे आया करो।

शरीफ़ज़ादों की बेजा ख़ताओं से मिलने,
यतीमख़ानों के बच्चों के बीच जाया करो।

हमारे हिस्से में माँ की दुआयें आईं 'कँवल',
तुम अपने हिस्से की दौलत से घर सजाया करो।

तुम्हारी अदाओं को हम जानते हैं,
तुम्हारी निगाहों को पहचानते हैं।

तुम्हारी ख़ुशी मेरी मानो न मानो,
तुम्हारी हर इक बात हम मानते हैं।

सजायें मुसलसल हमें मिल रही हैं,
ख़तायें हुईं क्या न हम जानते हैं।

सरे-आम औरत की अस्मत लुटे ना,
ये नेक अज़्म है, मन में हम ठानते हैं।

चलो फेस बुक पर 'कँवल' अब तुम्हारी,
गली की कहाँ ख़ाक हम छानते है।



आपको हो नहीं कोई ग़म,
ये दुआ है मेरे हम क़दम।

नम भी हो तो ख़ुशी से हो नम,
छलके ना आँख से ग़म-अलम।

लाल लब और भी लाल हों,
उनको शबनम रखे ताज़ा दम।

हम सफ़र आप जैसा मिला,
मुझ पे रब का बड़ा है करम।

हुस्न का अब फ़साना सुनो,
इश्क के हाथ में है क़लम।

आपके गालों की है नदी,
मेरे होटों की नैया सनम।

जब से है मुझपे वो मेहरबाँ,
भूल बैठा मैं उसका सितम।

तज्रबा है सभी का अलग,
ब्रह्म है सत्य या है भरम।

आशनाई का चर्चा 'कँवल',
आँख कर देता है मेरी नम।

मैं समुन्दर हूँ मुझको नदी चाहिये,
ज़िन्दगी में मुझे भी ख़ुशी चाहिये।

उनकी आँखों में शबनम झलकने लगी,
उनकी आँखों को भी अब नमी चाहिये।

आशना थे जो उनका करम यूँ हुआ,
दिल कहे अब तो बस अजनबी चाहिये।

तेरी ख़ुशबू, तेरे जिस्म का नूर हो,
बंद कमरे में बस तीरगी चाहिये।

मेरे होंटों की नैया मचलने लगे,
तेरे गालों की ऐसी नदी चाहिये।

दिल्लगी दिल्ली वालों की फ़ितरत रही,
हम को हरगिज़ न ये रहबरी चाहिये।

मुफ़्लिसी ओढ़ कर सो गया जब 'कँवल',
लोग कहने लगे आदमी चाहिये।



# माहिये, ग़ज़लनुमा और गीत

# माहिये

मौसम ये सुहाना है
आस मिलन की है
मिलने का ज़माना है

क्या हुस्न की सजधज है
दिल में धनक बनकर
इक लम्स का सूरज है

आँगन आँगन ख़ुश्बू
चाहत के किस्से
गुलशन गुलशन मंजू

मौसम पे जवानी है
देख अभी रुक जा
दरिया में रवानी है

तन्हाई में खोया है
रूप हटा देना
वह भीड़ में तन्हा है

यादों के हसीं अलबम
माज़ी के औराक़
आँखों में चुभे शबनम



घनघोर घटायें हैं
याद का सन्नाटा
ख़ामोश वफ़ायें हैं

हाथों में तेरा चेहरा
फूलों के पथराव
इक ज़ख़्म बड़ा गहरा

मुफ़्लिस की कहानी है
चाँद मुजस्सम तो
बेवा की जवानी है

मस्त रहो मस्ती में
चिंता से क्या हो
आग लगे बस्ती में

नई हवा का झोंका
फूलों का बिस्तर
आहट पर दिल चौंका

हर चेहरे पे फिसला
आँखों का जादू
मेले में दिल बहला

# ग़ज़लनुमा

ऐ मेरे हमसफ़र, ऐ मेरे हमनवा
मुस्कुरा, पास आ

आँधियों का सितम, और उसका करम
प्रेम का यह दिया

सुर्मई शाम है, सुर्ख़रू जाम है
दिलरुबा है घटा

बेवफ़ाई का शिकवा गिला क्यों भला
शुक्रिया कर अदा

लब पे लाली लगा, मुस्कुरा आँख में
और काजल लगा

आपको भी ख़ुशी, मुझसे मिलकर हुई
मैं भी ख़ुश हो गया

ये तअल्लुक़ की खिड़की खुली रख 'कंवल'
बंदिशें मत लगा।



गीत

# आन मिलो

सावन आया, तुम नहीं आये, नैन बन गये सावन सावन
आन मिलो मुझसे अब सावन
आन मिलो मुझसे अब सावन

नील गगन के उजले काले मेघों की ये आँख मिचोली
मूक किनारे से गंगा की लहरों की ये प्रेम-ठिठोली
आह! अभी तक अश्कों की रिमझिम से तर है मेरा दामन
आन मिलो मुझसे अब सावन
आन मिलो मुझसे अब सावन

फ़र्ज़ करे मजबूर मुझे कि ख़ुशियों की बारात फिरा दूँ
और मुहब्बत तड़प-तड़प कर कहे यार संग प्रीत निभा दूँ
दोनों की खींचातानी में टूट न जाये जीवन दरपन
आन मिलो मुझसे अब सावन
आन मिलो मुझसे अब सावन

सूख गई धरती, अंबर पे सावन तिश्नालब भटके है
घाट-घाट पर लहर-लहर ख़ुद प्यास लिये सर को पटके है
ऐसे में गर तुम आ जाओ ख़ुश हो जाये सबका तन-मन
आन मिलो मुझसे अब सावन
आन मिलो मुझसे अब सावन

देख कि सरहद से भी अब तक चौराहों पे नैन बिछाये
राह तुम्हारी तका करता हूँ गली-गली से आस लगाये
आ जाओ मेरी बाहों में हो जाये हर साँस सुहागन
आन मिलो मुझसे अब सावन
आन मिलो मुझसे अब सावन



## रूठ गई तू जब से...

रूठ गई तू जब से 'सावन' रूठ गई है बहार
करे अब कैसे प्रीत सिंगार
सूख गये अँखियों के समन्दर ऐसी लगी प्रीत की आग
डोर आस की टूट न जाये, फूट न जायें मेरे भाग
मन के गुलशन में निर्मोही कर दे प्रेम फुहार
करे अब कैसे प्रीत सिंगार

चाँद सितारे माँग में तेरी भर दूँ ये औकात नहीं
फूल से नाज़ुक बिस्तर दूँगा तुझको ऐसी बात नहीं
पतझड़ के हर मौसम में हाँ दूँगा तुझे बहार
करे अब कैसे प्रीत सिंगार

तू मुझको मिल जाये अगर, मिल जायें ज़माने की ख़ुशियाँ
तू जो साथ रहे हर ग़म में, रोज़ मनाऊँ रंगरलियाँ
सीधा सादा हूँ, मुफ़्लिस हूँ लेकिन हूँ दिलदार
करे अब कैसे प्रीत सिंगार

हीरा मोती लाल जवाहर प्रेम मिलन की राह में क्या
सारी ख़ुशियाँ लुटा दूँ तुझ पे छोड़ दूँ मैं सारी दुनिया
मेरे दिल के मालिक कर ले मेरी वफ़ा स्वीकार
करे अब कैसे प्रीत सिंगार

झूम रहा है पवन बसंती, कलियों ने ली अँगड़ाई
यौवन कलश छलक उट्ठे हैं रुत मिलन की है आई
ऐसे में दे दे दर्शन कर ले सोलह सिंगार
करे अब कैसे प्रीत सिंगार



## घायल अरमान

हो गये सावन गीत मेरे ज़ख़्मी, घायल अरमान
मुझे कहते हैं सब नादान

हँसते हैं सब प्रीत पे तेरी कसते हैं मुझ पे ताने
वक़्त के हाथों आज नुमाइश बन गये प्रेम के अफ़साने
ख़तरे में है तेरी वफ़ा, मेरे दिल के मेहमान
मुझे कहते हैं सब नादान

तोड़ लिया क्यों ख़तो-किताबत रूठ गए तुम क्यों सावन
दुश्मन दुनिया, बेबस मैं, सिसके यौवन, सुलगे तन मन
जनम जनम के मीत मेरे मत डोर आस की तान
मुझे कहते हैं सब नादान